हिंदी

लोकवाणी

नौवीं कक्षा

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

लोकवाणी

नौवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

संलग्न 'क्यू आर कोड' तथा इस पुस्तक में अन्य स्थानों पर दिए गए 'क्यू आर कोड' स्मार्ट फोन का प्रयोग कर स्कैन कर सकते हैं । स्कैन करने के उपरांत आपको इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त लिंक/लिंक्स (URL) प्राप्त होंगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७ © महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्री सुमंत दळवी
डॉ. रत्ना चौधरी
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : मयूरा डफळ
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर,सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/100000
मुद्रक : M/s. Renuka Binders, Pune

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्‌ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्‌धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

आप नवनिर्मित लोकवाणी (नौवीं कक्षा) पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे। रंग-बिरंगी, अति आकर्षक यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है।

हमें ज्ञात है कि आपको कविता, गीत, गजल सुनना प्रिय रहा है। कहानियों के विश्व में विचरण करना मनोरंजक लगता है। आपकी इन भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए कविता, गीत, दोहे, गजल, नई कविता, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संवाद आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश इस पुस्तक में किया गया है। ये विधाएँ केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों, क्षमताओं एवं व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं। इन रचनाओं के चयन का आधार आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को रखा गया है।

डिजिटल दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टि तथा अभ्यास को 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय', 'पाठ के आँगन में', 'भाषा बिंदु', विविध कृतियाँ आदि के माध्यम से पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। आपकी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए 'आसपास', 'पाठ से आगे', 'कल्पना पल्लवन' 'मौलिक सृजन' को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है। डिजिटल जगत में आपके साहित्यिक विचरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'मैं हूँ यहाँ' में अनेक संकेत स्थल (लिंक) भी दिए गए हैं। इनका सतत उपयोग अपेक्षित है।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः आवश्यक प्रवीणता तथा उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों के सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके कार्य को सुकर एवं सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा।

विश्वास है कि आप सब पाठ्‌यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता की भावना के साथ उत्साह प्रदर्शित करेंगे।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ अप्रैल २०१७
अक्षय तृतीया

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	नदी की पुकार	गीत	सुरेशचंद्र मिश्र	१
२.	झुमका	वर्णनात्मक कहानी	सुशील सरित	३
३.	निज भाषा (पठनार्थ)	दोहा	भारतेंदु हरिश्चंद्र	७
४.	मान जा मेरे मन	व्यंग्यात्मक निबंध	रामेश्वर सिंह कश्यप	९
५.	किताबें कुछ कहना चाहती हैं	नई कविता	सफदर हाश्मी	१३
६.	'इत्यादि' की आत्मकहानी (पठनार्थ)	वर्णनात्मक निबंध	यशोदानंद अखौरी	१५
७.	छोटा जादूगर	संवादात्मक कहानी	जयशंकर प्रसाद	१९
८.	जिंदगी की बड़ी जरुरत है हार	नवगीत	संतोष मडकी	२४

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	गागर में सागर	दोहा	बिहारी	२७
२.	मैं बरतन माँजूँगा	आत्मकथात्मक कहानी	हमराज भट्ट 'बालसखा'	२९
३.	ग्रामदेवता (पठनार्थ)	कविता	डॉ. रामकुमार वर्मा	३३
४.	साहित्य की निष्कपट विधा है डायरी	विचारात्मक निबंध	कुबेर कुमावत	३५
५.	उम्मीद	गजल	कमलेश भट्ट 'कमल'	३९
६.	सागर और मेघ	एकांकी	राय कृष्णदास	४२
७.	लघुकथाएँ (पठनार्थ)	लघुकथा	ज्योति जैन	४६
८.	झंडा ऊँचा सदा रहेगा	प्रयाण गीत	रामदयाल पांडेय	४८
	रचनाविभाग			५१

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा हैं कि नौवीं कक्षा के अंत में विद्‍यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हो ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. गद्‍य-पद्‍य विधाओं को रसग्रहण करते हुए सुनना/सुनाना । २. प्रसार माध्यम के कार्यक्रमों को एकाग्रता एवं विस्तारपूर्वक सुनाना । ३. वैश्विक समस्या को समझने हेतु संचार माध्यमों से प्राप्त जानकारी सुनकर उनका उपयोग करना । ४. सुने हुए अंशों पर विश्लेषणात्मक प्रतिक्रिया देना । ५. सुनते समय कठिन लगने वाले शब्दों, मुद्‍दों, अंशों का अंकन करना ।
भाषण-संभाषण	१. परिसर एवं अंतरविद्‍यालयीन कार्यक्रमों में सहभागी होकर पक्ष-विपक्ष में मत प्रकट करना । २. देश के महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना, विचार व्यक्त करना । ३. दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में शुद्‍ध उच्चारण के साथ वार्तालाप करना । ४. पठित सामग्री के विचारों पर चर्चा करना तथा पाठ्‍येतर सामग्री का आशय बताना । ५. विनम्रता एवं दृढ़तापूर्वक किसी विचार के बारे में मत व्यक्त करना, सहमति-असहमति प्रगट करना ।
वाचन	१. गद्‍य-पद्‍य विधाओं का आशयसहित भावपूर्ण वाचन करना । २. अनूदित साहित्य का रसास्वादन करते हुए वाचन करना । ३. विविध क्षेत्रों के पुरस्कार प्राप्त व्यक्तियों की जानकारी का वर्गीकरण करते हुए मुखर वाचन करना । ४. लिखित अंश का वाचन करते हुए उसकी अचूकता, पारदर्शिता, अलंकारिक भाषा की प्रशंसा करना । ५. साहित्यिक लेखन, पूर्व ज्ञान तथा स्व अनुभव के बीच मूल्यांकन करते हुए सहसंबंध स्थापित करना ।
लेखन	१. गद्‍य-पद्‍य साहित्य के कुछ अंशों/परिच्छेदों में विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए आकलनसहित सुपाठ्‍य, शुद्‍धलेखन करना । २. रूपरेखा एवं शब्द संकेतों के आधार पर लेखन करना । ३. पठित गद्‍यांशों, पद्‍यांशों का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करना । ४. नियत प्रकारों पर स्वयंस्फूर्त लेखन, पठित सामग्री पर आधारित प्रश्नों के अचूक उत्तर लिखना । ५. किसी विचार, भाव का सुसंबद्‍ध प्रभावी लेखन करना, व्याख्या करना, स्पष्ट भाषा में अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं की संक्षिप्त अभिव्यक्ति करना ।
अध्ययन कौशल	१. मुहावरे, कहावतें, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्यों तथा अन्य भाषा के उद्‍धरणों का प्रयोग करने हेतु संकलन, चर्चा और लेखन । २. अंतरजाल के माध्यम से अध्ययन करने के लिए जानकारी का संकलन । ३. विविध स्रोतों से प्राप्त जानकारी, वर्णन के आधार पर आकृति संगणकीय प्रस्तुति के लिए (पी.पी.टी. के मुद्‍दे) बनाना और शब्दसंग्रह द्‍वारा लघुशब्दकोश बनाना । ४. श्रवण और वाचन के समय ली गई टिप्पणियों का स्वयं के संदर्भ के लिए पुनःस्मरण करना । ५. उद्‍धरण, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, सुवचन आदि का संकलन और उपयोग करना ।

	६. संगणक पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते समय दूसरों के अधिकार (कॉपी राईट) का उल्लंघन न हो इस बात का ध्यान रखना । ७. संगणक की सहायता से प्रस्तुतीकरण और ऑन लाईन, आवेदन, बिल आदि का उपयोग करना। ८. प्रसार माध्यम/संगणक आदि पर उपलब्ध होने वाली कलाकृतियों का रसास्वादन एवं चिकित्सक विचार करना। ९. संगणक/ अंतरजाल की सहायता से भाषांतर/लिप्यंतरण करना ।
व्याकरण	१. पुनरावर्तन-कारक, वाक्य परिवर्तन एवं प्रयोग, काल परिवर्तन २ पर्यायवाची-विलोम, उपसर्ग-प्रत्यय, संधि (३) ३. विकारी, अविकारी शब्दों का प्रयोग (खेल के रूप में) ४. **अ.** विरामचिह्न (..., xxx, ., -०-) **ब.** शुद्‌ध उच्चारण प्रयोग और लेखन (स्रोत, स्त्रोत, शृंगार) ५. मुहावरे-कहावतें प्रयोग, चयन

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा-निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । भाषिक कौशलों के प्रत्यक्ष विकास के लिए पाठ्यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय' एवं 'लेखनीय' में दी गई हैं । पाठ पर आधारित कृतियाँ 'पाठ के आँगन' में आई हैं । जहाँ 'आसपास' में पाठ से बाहर खोजबीन के लिए है, वहीं 'पाठ से आगे' में पाठ के आशय को आधार बनाकर उससे आगे की बात की गई है । 'कल्पना पल्लवन' एवं 'मौलिक सृजन' विद्‌यार्थियों के भाव विश्व एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इसमें दिए गए अभ्यास के प्रश्न पाठ से एवं पाठ के बाहर के भी हैं । विद्‌यार्थियों ने उस पाठ से क्या सीखा, उनकी दृष्टि में पाठ, का उल्लेख उनके द्‌वारा 'रचना बोध' में करना है । 'मैं हूँ यहाँ' में पाठ की विषय वस्तु एवं उससे आगे के अध्ययन हेतु संकेत स्थल (लिंक) दिए गए हैं । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है। कृतियों और उदाहरणों के द्‌वारा संकल्पना तक विद्‌यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आप सबके कंधों पर है। 'पठनार्थ' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है और यह विद्‌यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है। अतः 'पठनार्थ' सामग्री का वाचन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषिक खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें। क्षमता विधान एवं पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

१. नदी की पुकार

– सुरेशचंद्र मिश्र

आसपास

जल के आसपास के क्षेत्र की स्वच्छता रखने हेतु आप क्या करते हैं, बताइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● शुद्‌ध जल की आवश्यकता पर चर्चा करें । ● जल के आसपास का क्षेत्र अस्वच्छ रहने पर वे क्या करते हैं, पूछें। ● अस्वच्छ परिसर के जल से होने वाली हानियाँ बताने के लिए कहें और समझाएँ । ● जल के आसपास का क्षेत्र स्वच्छ रखने हेतु घोषवाक्य के पोस्टर बनवाएँ और परिसर में लगवाएँ। स्वच्छता का प्रचार-प्रसार करवाएँ ।

सबको जीवन देने वाली करती सदा भलाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

मर्यादा में बहने वाली, होकर अमृत धारा,
प्यास बुझाती हूँ उसकी, जिसने भी मुझे पुकारा,
परहित का जीवन है अपना, मत बनिए सौदाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

गिरिवन से निकली थी, तब मन में पाला था सपना,
जो भी पथ में मिल जाए, बस उसे बना लो अपना,
मगर मलिनता लोगों ने तो, मुझमें डाल मिलाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

नदिया के तट पर बैठो, तो हरदम गीत सुनाती,
सूखा पड़ जाए तो भी, कितनों की प्यास बुझाती,
बिना शुल्क जल दे देती है, कितनी आए महँगाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

नदिया नहीं रहेगी तो, सागर भी मुरझाएगा,
मुझे बताओ नाला तब, किससे मिलने जाएगा,
'हो हैया-हो हैया' की धुन, न दे कभी सुनाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

झरना बनकर मैंने, नयनों को बाँटी खुशहाली,
सरिता बन करके खेतों में, फैलाई हरियाली,
खारे सागर में मिलकर के, मैंने दिया मिठाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

परिचय

जन्म : १८ मई १९६५ धनऊपुर, प्रतापगढ़ (उ. प्र.) **परिचय :** आप आधुनिक हिंदी कविता क्षेत्र के जाने-माने गीतकार हैं।
रचनाएँ : संकल्प, जय गणेश, वीर शिवाजी, पत्नी पूजा (काव्य संग्रह) आपकी चर्चित कृतियाँ हैं ।

पद्‌य संबंधी

गीत : सामान्यतया स्वर, पद और ताल से युक्त गान ही गीत है । इनमें एक मुखड़ा और कुछ अंतरे होते हैं।

प्रस्तुत गीत के माध्यम से कवि ने हमारे जीवन में नदी के योगदान को दर्शाते हुए इसे प्रदूषण मुक्त रखने के लिए प्रेरित किया है ।

श्रवणीय

'नदी सुधार परियोजना' संबंधी कार्य सुनिए और उसकी आवश्यकता अपने मित्रों को सुनाइए ।

शब्द संसार

परहित (पुं.सं.) = दूसरे की भलाई
सौदाई (पु.फा.) = पागल
गिरिवन (पुं.सं.) = पर्वतीय जंगल
मलिनता (स्त्री.सं.) = गंदगी

कल्पना पल्लवन

'नदी के मन के भाव' इस विषय पर भाषण तैयार करके प्रस्तुत कीजिए ।

संभाषणीय

'जलयुक्त शिवार' पर चर्चा करें ।

पठनीय

जल आपूर्ति संबंधी जानकारी निम्नलिखित के आधार पर पढ़िए :–

जल स्रोत | शुद्धीकरण प्रकल्प | लाभान्वित क्षेत्र

पाठ के आँगन में

पाठ से आगे

पानी की समस्या समझते हुए 'होली उत्सव का बदलता रूप' पर अपना मत लिखिए ।

(१) उत्तर लिखिए :–
(क) अपने शब्दों में नदी की स्वाभाविक विशेषताएँ ...
(ख) किसी एक चरण का भावार्थ

(२) आकृति पूर्ण कीजिए :–

नदी नहीं रही तो

(३) संजाल पूर्ण कीजिए :–

कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक संपदा

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :–

पर्यायवाची

नदी

आकाश

पथ

रचना बोध

....
....
....

२. झुमका

– सुशील सरित

संभाषणीय

'शिक्षित स्त्री, प्रगत परिवार' इस विधान को स्पष्ट कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से परिवार के महिलाओं की शिक्षा संबंधी जानकारी प्राप्त करें ।
- स्त्री शिक्षा के लाभ पूछें । ● स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर विद्यार्थियों से अपने विचार कहलवाएँ ।

कांति ने घर का कोना–कोना ढूँढ़ मारा, एक–एक आलमारी के नीचे बिछे कागज तक उलटकर देख लिए, बिस्तर हटाकर दो– दो बार झाड़ डाला लेकिन झुमका न मिलना था, न मिला । यह तो गनीमत थी कि सर्वेश को झुमके के बारे में पता ही नहीं था वरना सोचकर ही कांति सिर से पाँव तक सिहर उठी । अभी पिछले महीने ही तो मिन्नी की घड़ी खोने पर सर्वेश ने किस तरह पूरा घर सर पर उठा लिया था । कांति ने हाथ में पकड़े दूसरे झुमके पर नजर डाली । कल अपनी पूरे दो साल की जमा की हुई रकम के बदले में झुमके खरीदते समय कांति ने एक बार भी नहीं सोचा था कि उसकी पूरे दो साल तक इकट्ठा की हुई रकम से झुमके खरीदकर जब वो सर्वेश को दिखाएगी तो वे क्या कहेंगे ।

दरअसल झुमके का वह जोड़ा था ही इतना खूबसूरत कि एक नजर में ही उसे भा गया था । दो दिन पहले ही तो रमा को एक सोने की अँगूठी खरीदनी थी । वहीं शोकेस में लगे झुमकों को देखकर कांति ने उसे निकलवा लिया । दाम पूछे तो कांति को विश्वास ही नहीं हुआ कि इतना खूबसूरत और चार तोले का लगने वाला वह झुमका सेट केवल दो हजार का हो सकता है । दुकानदार रमा का परिचित था, इसी वजह से उसने कांति के आग्रह पर न केवल उस झुमका सेट को शोकेस से अलग निकालकर रख दिया वरना यह भी वादा कर दिया कि वह दो दिन तक इस सेट को बेचेगा भी नहीं । पहले तो कांति ने सोचा कि सर्वेश से खरीदवाने का आग्रह करे लेकिन मार्च का महीना और इनकम टैक्स के टेंशन से घिरे सर्वेश से कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी । अपनी सारी जमा–पूँजी इकट्ठा कर वह दूसरे ही दिन जाकर वह सेट खरीद लाई । अगले हफ्ते अपनी 'मैरिज एनिवर्सरी की पार्टी' में पहनेगी तभी सर्वेश को बताएगी । यह सोचकर उसने सर्वेश क्या, घर में किसी को भी कुछ नहीं बताया ।

आज सुबह रमा के आने पर जब कांति ने उसे झुमके दिखाए तो ''अरे, इसमें बगलवाला मोती तो टूटा हुआ है '' कहकर रमा ने झुमके के एक टूटे मोती की तरफ इशारा किया तो उसने भी ध्यान दिया । अभी चलकर ठीक करा लें तो बिना किसी अतिरिक्त राशि लिए ठीक हो जाएगा वरना बाद में वह सुनार माने या न माने, ऐसा सोचकर वह तुरंत ही रमा के साथ रिक्शा

परिचय

सुशील सरित जी आधुनिक कथाकार हैं । आपकी कहानियाँ, निबंध विविध पत्र–पत्रिकाओं में प्रायः छपते रहते हैं ।

गद्य संबंधी

वर्णनात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही वर्णन कहानी है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने प्रच्छन्न रूप में परोपकार दया एवं अन्य मानवीय गुणों को दर्शाते हुए इन्हें अपनाने का संदेश दिया है ।

करके सुनार के यहाँ चली गई और सुनार ने भी, ''अरे बहन जी, यह तो मामूली-सी बात है, अभी ठीक हुई जाती है ।''कहकर आधे घंटे में ही झुमका न केवल ठीक करके दे दिया 'आगे भी कोई छोटी-मोटी खराबी हो तो निःसंकोच अपनी ही दुकान समझकर आ जाइएगा' कहकर उसे तसल्ली दी । घर आकर कांति ने झुमके का पैकेट मेज पर रख दिया और घर के काम-काज में लग गई । अब काम-काज निबटाकर जब कांति ने पैकेट को आलमारी में रखने के लिए उठाया तो उसमें एक ही झुमका नजर आ रहा था । दूसरा झुमका कहाँ गया, यह कांति समझ ही नहीं पा रही थी । सुनार के यहाँ से तो दोनों झुमके लाई थी, इतना कांति को याद था ।

खाना खाकर दोपहर की नींद लेने के लिए कांति जब बिस्तर पर लेटी तो बहुत देर तक उसकी बंद आँखों के सामने झुमका ही घूमता रहा । बड़ी मुश्किल से आँख लगी तो आधे घंटे बाद ही तेज-तेज बजती दरवाजे की घंटी ने उसे उठने पर मजबूर कर दिया ।

'कमलाबाई ही होगी' सोचते हुए उसने ड्राइंग रूम का दरवाजा खोल दिया । ''बहू जी, आज जरा देर हो गई, लड़की दो महीने से यहीं है, उसके लड़के की तबीयत जरा खराब हो गई थी सो डॉक्टर को दिखाकर आ रही हूँ ।'' कमलाबाई ने एक साँस में ही अपनी सफाई दे डाली और बरतन माँजने बैठ गई ।

कमलाबाई की लड़की दो महीने से मायके में है, यह खबर कांति के लिए नई थी । ''क्यों ? उसका घरवाला तो कहीं ट्रांसपोर्ट कंपनी में नौकरी करता है न ?'' कांति से पूछे बिना रहा नहीं गया ।

''हाँ बहू जी, जबसे उसकी नौकरी पक्की हुई है तबसे उन लोगों की आँखें फट गई हैं । कहते हैं, तेरी माँ ने दो-चार गहने भी नहीं दिए । अब तुम्हीं बताओ बहू जी, चौका-बासन करके मैं आखिर कितना करूँ । बिटिया के बापू होते तो और बात थी । बस इसी बात पर बिटिया को लेने नहीं आए ।'' कमलाबाई ने बरतनों को झबिया में रखकर भर आई आँखों की कोरों को कोहनी से पोंछ डाला।

✻ सहानुभूति के दो-चार शब्द कहकर और 'अपनी इस महीने की पगार लेती जाना' कहकर कांति ऊपर छत से सूखे हुए कपड़े उठाने चली गई । कपड़े समेटकर जब कांति नीचे आई तो कमलाबाई बरतन किचन में रखकर जाने को तैयार खड़ी थी । ''लो, ये दो सौ रुपये तो ले जाओ और जरूरत पड़े तो माँग लेना,'' कहकर कांति ने पर्स से सौ-सौ के दो नोट निकालकर कमलाबाई के हाथ पर रख दिए । नोट अपने पल्लू में बाँधकर कमलाबाई दरवाजे तक पहुँची ही थी कि न जाने क्या सोचती हुई वह फिर वापस लौट आई । ''क्या बात है कमलाबाई?''उसे वापस लौटकर आते देख कांति चौंकी । ✻

''बहू जी, आज दोपहर में मैं जब बाजार से रस्तोगी साहब के घर काम करने जा रही थी तो रास्ते में यह सड़क पर पड़ा मिला । कम-से-कम

मौलिक सृजन

'हम समाज के लिए समाज हमारे लिए' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

आसपास

निम्न सामाजिक समस्याओं को लेकर आप क्या कर सकते हैं बताइए :-

- अशिक्षा
- बेरोजगारी

✻ परिच्छेद पर आधारित कृतियाँ

(१) एक से दो शब्दों में उत्तर लिखिए :-

(क) कमलाबाई की पगार

(ख) कमलाबाई ने नोट यहाँ रखे

(२) 'सौ' शब्द का प्रयोग करके कोई दो कहावतें लिखिए ।

(३) 'अपने घरों में काम करने वाले नौकरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार करना चाहिए', अपने विचार लिखिए ।

दो तोले का तो होगा, बहू जी ! मैं कहीं बेचने जाऊँगी तो कोई समझेगा कि चोरी का है । आप इसे बेच दें, जो पैसा मिलेगा, उससे कोई हलका-फुलका गहना बिटिया को दिलवा दूँगी और ससुराल खबर करवा दूँगी'' कहते हुए कमलाबाई ने एक झुमका अपने पल्लू से खोलकर कांति के हाथ पर रख दिया ।

''अरे !'' कांति के मुँह से अपने खोए हुए झुमके को देखकर एक शब्द ही निकल सका । ''विश्वास मानो बहू जी, यह मुझे सड़क पर ही पड़ा हुआ मिला ।'' कमलाबाई उसके मुँह से 'अरे' शब्द सुनकर सहम सी गई ।

''वह बात नहीं है, कमलाबाई,'' दरअसल आगे कुछ कहती, इससे पहले कि कांति की आँखों के सामने कमलाबाई की लड़की की सूरत घूम गई । लड़की को उसने कभी देखा नहीं था लेकिन कमलाबाई ने उसके बारे में इतना कुछ बता दिया था कि कांति को लगता था कि उसने उसे बहुत करीब से देखा है । दुबली-पतली, गंदुमी रंग की कमजोर-सी लड़की, जिसे दो महीने से उसके पति ने केवल इस कारण मायके में छोड़ा हुआ है कि कमलाबाई ने उसे दो-चार गहने भी नहीं दिए थे ।

कांति को एक पल को यही लगा कि सामने कमलाबाई नहीं, उसकी वही दुर्बल लड़की खड़ी है, जिसके एक हाथ में उसके झुमके के सेट का खोया हुआ झुमका चमक रहा है ।

''क्या सोचने लगीं बहू जी?'' कमलाबाई के टोकने पर कांति को जैसे होश आ गया । ''कुछ नहीं'' कहकर वह उठी और आलमारी खोलकर दूसरा झुमका निकाला । फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने वह झुमका वहीं रख दिया । आलमारी उसी तरह बंद कर वापस मुड़ी, ''कमलाबाई, तुम्हारा यह झुमका मैं बिकवा दूँगी । फिलहाल तो ये हजार रुपये ले जाओ और कोई छोटा-मोटा सेट खरीदकर अपनी बिटिया को दे देना । अगर बेचने पर कुछ ज्यादा पैसे मिले तो मैं बाद में तुम्हें दे दूँगी ।'' यह कहकर कांति ने दूधवाले को देने के लिए रखे पैसों में से सौ-सौ के दस नोट निकालकर कमलाबाई के हाथ में पकड़ा दिए ।

''अभी जाकर रघू सुनार से बाली का सेट ले आती हूँ, बहू जी ! भगवान तुम्हारा सुहाग सलामत रखे,'' कहती हुई कमलाबाई चली गई ।

श्रवणीय

आकाशवाणी पर किसी सुप्रसिद्ध महिला का साक्षात्कार सुनिए ।

लेखनीय

'दहेज' समाज के लिए एक कलंक है, इसपर अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

गनीमत (स्त्री.अ.) = संकट में संतोष की बात
तसल्ली (स्त्री.अ.) = धीरज
झबिया (स्त्री.) **छोटा झब्बा** = टोकरी
कोहनी (स्त्री.सं.) = टिहुनी (बाँह के बीच का जोड़)
गंदुमी (वि.फा.) = गेहुँआ रंग
चौका-बासन (पु.) = रसोई घर, बरतन साफ करना

मुहावरे

सिहर उठना = भय से काँपना
घर सर पर उठा लेना = शोर मचाना
वादा करना = वचन देना
आँख फटना = चकित हो जाना
सलामत रखना = सुरक्षित रखना

पाठ के आँगन में

पठनीय

लेखिका सुधा मूर्ति द्वारा लिखित कोई एक कहानी पढ़िए ।

(१) एक–दो शब्दों में ही उत्तर लिखिए :–

(क) दुबली–पतली –

(ख) दो महीने से मायके में है –

(ग) कमजोर–सी –

(घ) दो महीने से यहीं है –

(२) कारण लिखिए :–

(च) कांति को सर्वेश से झुमका खरीदवाने की हिम्मत नहीं हुई ....

(छ) कांति ने कमलाबाई को एक हजार रुपये दिए ....

(३) संजाल पूर्ण कीजिए :–

झुमका ढूँढ़ने की जगहें

(४) आकृति पूर्ण कीजिए :–

झुमके की विशेषताएँ

पाठ से आगे

आभूषणों की सूची तैयार कीजिए और शरीर के किन अंगों पर पहने जाते हैं, बताइए ।

भाषा बिंदु

रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर नए वाक्य बनाइए :

विलोम

विलोम शब्द

१. कांति को कमला पर विश्वास था । ....×....... ....

२. बड़ी मुश्किल से उसकी आँख लगी । ....×....... ....

३. दुकानदार रमा का परिचित था । ....×....... ....

४. सोच समझकर व्यय करना चाहिए । ....×....... ....

५. हमें सदैव अपने लिए किए गए कामों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए । ....×....... ....

६. पूर्व दिशा में सूर्योदय होता है । ....×....... ....

........×....... ....

रचना बोध

....

....

....

३. निज भाषा

(पठनार्थ)

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।

उन्नति पूरी है तबहि, जब घर उन्नति होय ।
निज शरीर उन्नति किए, रहत मूढ़ सब कोय ।।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्वे हैं सोय ।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय ।।

इक भाषा इक जीव, इक मति सब घर के लोग ।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग ।।

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात ।
निज भाषा में कीजिए, जो विद्‌या की बात ।।

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय ।
यह गुन भाषा और महँ, कबहूँ नाहीं होय ।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहू, भाषा माँहि प्रचार ।।

भारत में सब भिन्न अति, ताही सों उत्पात ।
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात ।।

परिचय

जन्म : ९ सितंबर १८५०, वाराणसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** ६ जनवरी १८८५, वाराणसी (उ.प्र.) **परिचय :** बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतेंदु हरिश्चंद्र को खड़ी बोली का जनक कहा जाता है । आपने कविता, नाटक, निबंध, व्याख्यान आदि का लेखन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : बंदर-सभा, बकरी का विलाप (हास्य काव्य कृतियाँ), अंधेर नगरी चौपट राजा (हास्य-व्यंग्य प्रधान नाटक) भारत वीरत्व, विजय-बैजयंती, सुमनांजलि, मधुमुकुल, वर्षा-विनोद, राग-संग्रह आदि (काव्य संग्रह) ।

पद्‌य संबंधी

दोहाः यह अर्द्ध सम मात्रिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं ।

इन दोहों में कवि ने अपनी भाषा के प्रति गौरव अनुभव करने, मिलकर उन्नति करने, मिलजुलकर रहने का संदेश दिया है।

शब्द संसार

निज (वि.सं.) = अपना
हिय (पु.सं.) = ह्रदय
सूल (पुं.सं.) = शूल, काँटा
जदपि (योज.) = यद्‌यपि
मूढ़ (वि.सं.) = अज्ञानी
कोय (सर्व.) = कोई
मति (स्त्री.सं.) = बुद्‌धि
महँ (अव्य.) (सं.) = मध्य
देसन (पु.सं.) = देश
उत्पात (पु.सं.) = उपद्रव

मौलिक सृजन

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' इस कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

'हिंदी दिवस' समारोह के अवसर पर अपने वक्तृत्व में हिंदी भाषा का महत्त्व प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

अपने विद्‌यालय में मनाए गए 'बाल दिवस' समारोह का वर्णन लिखिए ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/O_b9Q1LpHs8

पठनीय

हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार करने वाले महान व्यक्तियों की जानकारी अंतरजाल/पुस्तकालय से पढ़िए ।

- पुरुषोत्तमदास टंडन
- लोकमान्य टिळक
- सेठ गोविंददास
- मदन मोहन मालवीय

भाषा बिंदु

शब्द-युग्म पूरे करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

घर - [ ] ....

ज्ञान - [ ] ....

भला - [ ] ....

प्रचार - [ ] ....

भूख - [ ] ....

भोला - [ ] ....

रचना बोध

....
....
....

४. मान जा मेरे मन

– रामेश्वर सिंह कश्यप

आसपास

हृदय को छू लेने वाली माता–पिता के स्नेह भरी कोई घटना सुनाइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- हृदय को छूने वाले प्रसंग के बारे में पूछें । ● उस समय माता–पिता ने क्या किया, बताने के लिए प्रेरित करें ।
- इस प्रसंग के संबंध में विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के बारे में जानें ।

उस रात मुझमें और मेरे मन में ठन गई । अनबन का कारण यह था कि मन मेरी बात ही नहीं सुनता था । बचपन से ही मैंने मन को मनमानी करने की छूट दे दी; अब बुढ़ापे की देहरी पर पाँव देते वक्त जो मैंने इस बेलगाम घोड़े को लगाम देने की कोशिश की तो अड़ गया । यों कई वर्षों से इसे काबू में लाने के फेर में हूँ लेकिन हर बार कन्नी काट जाता है ।

मामला बड़ा संगीन था । मेरे हाथ में स्वयंचलित आदमी तौलने वाली मशीन का टिकट था । जिस पर वजन के साथ टिप्पणी लिखी थी 'आप प्रगतिशील हैं लेकिन गलत दिशा में ।' आधी रात का वक्त था । मैं चारपाई पर उदास बैठा अपने मन को समझाने की कोशिश कर रहा था । मेरा मन रूठा–सा सूने कमरे में चहलकदमी कर रहा था । मैंने कहा–'मन भाई, डॉक्टर कह रहा था कि आदमी का वजन तीन मन से ज्यादा नहीं होता । देखो यह टिकट देख लो, मैं तीन मन से भी सात सेर ज्यादा हो गया हूँ । स्टेशनवाली मशीन पर तुलने के लिए चढ़ा तो टिकट पर कोई वजन ही नहीं आया; लिखा था, 'कृपया एक बार मशीन पर एक ही आदमी चढ़े ।' फिर बाजार गया तो वहाँ की मशीन ने वजन बताया । सोचो, जब मुझसे मशीन को इतना कष्ट होता है तब.... ।'

मन ने बात काटकर दृष्टांत दिया, 'तुमने बचपन में बाइस्कोप में देखा होगा । कोलकाता की एक भारी–भरकम महिला थी । उस लिहाज से तुम अभी काफी दुबले–पतले हो ।' मैंने कहा–'मन भाई, मेरी जिंदगी बाइस्कोप होती तो रोग क्या था ? मेरी तकलीफों पर गौर करो । रिक्शेवाले मुझे देखकर ही भाग खड़े होते हैं । दर्जी अकेले मुझे नाप नहीं सका ।'

व्यक्तिगत आक्षेप सुनकर मैं तिलमिला उठा । ऐसी घटना शाम को ही घट चुकी थी । चिढ़कर बोला–'इतने वर्षों से तुम्हें पालता रहा, यही गलती की । मैं क्या जानता था, तुम आस्तीन के साँप निकलोगे ! विद्‌वानों ने ठीक ही उपदेश दिया है कि 'मन को मारना चाहिए', यह सुनकर मेरा मन अप्रत्याशित ढंग से जैसे और बिसूरने लगा–'इतने दिनों की सेवाओं का यही फल है ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ, तुम डॉक्टरों और दुबले आदमियों के साथ मिलकर मेरे विरुद्‌ध षडयंत्र कर रहे हो । विश्वासघाती ! मैं तुमसे बोलूँगा ही नहीं । व्यक्ति को हमेशा उपकारी वृत्ति रखनी चाहिए ।'

परिचय

जन्म : १२ अगस्त १९२७ सेमरा गाँव । (बिहार) **मृत्यु :** २४ अक्टूबर १९९२ ।
परिचय : रामेश्वर सिंह कश्यप का रेडियो नाटक 'लोहा सिंह' भोजपुरी का पहला सोप ओपेरा है । **प्रमुख कृतियाँ :** रोबोट, किराए का मकान, पंचर, आखिरी रात, लोहा सिंह आदि नाटक ।

गद्‌य संबंधी

हास्य–व्यंग्यात्मक निबंध : किसी विषय का तार्किक, बौद्‌धिक विवेचनापूर्ण लेख निबंध है । हास्य–व्यंग्य में उपहास का प्राधान्य होता है ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने मन पर नियंत्रण न रख पाने की कमजोरी पर करारा व्यंग्य किया है तथा वास्तविकता की पहचान कराई है ।

मेरा मन मुँह मोड़कर सिसकने लगा । मुझे लेने के देने पड़ गए । मैं भी निराश होकर आर्त स्वर में भजन गाने लगा-'जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ।' मेरी आवाज से दीवार पर टँगे कैलेंडर डोलने लगे, किताबों से लदी टेबल काँपने लगी; चाय के प्याले में पड़ा चम्मच घुँघरू जैसा बोलने लगा पर मेरा मन न माना, भिनका तक नहीं । भजन विफल होता देख मैंने दादरे का सुर लगाया-'मनवाँ मानत नाहीं हमार रे ।' दादरा सुनकर मेरे मन ने आँसू पोंछ लिए, मगर बोला नहीं । मैं सीधा नए काट के कंठ संगीत पर उतर आया-

'मान जा मेरे मन, चाँद तू मैं गगन
फूल तू मैं चमन, मेरी तुझमें लगन
मान जा मेरे मन ।'

आखिर मन साहब मुस्कराने लगे । बोले-'तुम चाहते क्या हो ।' मैंने डॉक्टर का पुर्जा सामने रखते हुए कहा- 'सहयोग, तुम्हारा सहयोग' मेरे मन ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा- 'पिछले तेरह साल से इसी तरह के पुर्जों ने तुम्हारा दिमाग खराब कर रखा है । भला यह भी कोई भले आदमी का काम है । लिखता है, खाना छोड़ दो...।' मैंने एक खट्टी डकार लेकर कहा-'तुम साथ देते तो मैं कभी का खाना छोड़ देता । एक तुम्हारे कारण मेरा शरीर चरबी का महासागर बना जा रहा है । ठीक ही कहा गया है कि एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है ।' मेरे मन ने उपेक्षापूर्वक कागज पढ़ते हुए कहा-'लिखता है, कसरत करो ।' मैंने मुलायम तकिये पर कुहनी टेककर जम्हाई लेते हुए कहा - 'कसरत करो । कसरत का सब सामान तो है ही अपने पास । सब, शुरू कर देना है । वकील साहब पिछले साल सुर्खी कूटने के लिए मेरा मुग्दर माँगकर ले गए थे, कल ही मँगा लूँगा ।'

मैंने रुआँसा होकर कहा-'तुम साथ दो तो यह भी कुछ मुश्किल नहीं है । सच पूछो तो आज तक मैंने देखा ही नहीं कि यह सूरज निकलता किधर से है ।' मन ने बिलकुल घबराकर कहा-'लेकिन दौड़ोगे कैसे ?' मैंने लापरवाही से जवाब दिया-'दोनों पैरों से । ओस से भीगा मैदान, दौड़ता हुआ मैं, उगता हुआ सूरज । आह, कितना सुंदर दृश्य होगा । सुबह उठकर सभी को दौड़ना चाहिए । सुबह उठते ही औरतें चूल्हा जला देती हैं । आँख खुलते ही भुक्खड़ों की तरह खाने की फिक्र में लग जाना बहुत बुरी बात है । सुबह उठना तो बहुत आसान बात है । दोनों आँखें खोलकर चारपाई से उतरे ढाई-तीन हजार दंड-बैठकें निकाली, मैदान में पंद्रह-बीस चक्कर दौड़े, फिर लौटकर मुग्दर हिलाना शुरू कर दिया ।' मेरा मन यह सब सुनकर हँसने लगा । मैंने रोककर कहा- 'देखो यार हँसने से काम नहीं चलेगा । सुबह खूब सबेरे जागना पड़ेगा ।' मन ने कहा-'अच्छा अब सो जाओ ।' आँख लगते ही मैं सपना देखने लगा कि मैदान में तेजी से दौड़ रहा हूँ, कुत्ते भौंक रहे हैं,

श्रवणीय

मन और बुद्धि के महत्त्व को सुनकर आप किसकी बात मानोगे सकारण सोचिए ?

संभाषणीय

'मानवीय भावनाएँ मन से जुड़ी होती हैं,' इस पर गुट में चर्चा कीजिए ।

मौलिक सृजन

'मन चंगा तो कठौती में गंगा' इस उक्ति पर कविता/विचार लिखिए ।

गायें रँभा रही हैं, मुर्गे बाँग दे रहे हैं । अचानक एक विलायती किस्म का कुत्ता मेरे दाहिने पैर से लिपट गया । मैंने पाँव को जोरों से झटका कि आँख खुल गई । देखता क्या हूँ कि मैं फर्श पर पड़ा हूँ । टेबल मेरे ऊपर है और सारा परिवार चीख-चीखकर मुझे टेबल के नीचे से निकाल रहा है । खैर, किसी तरह लँगड़ाता हुआ चारपाई पर गया कि याद आया, मुझे तो व्यायाम करना है । मन ने कहा-'व्यायाम करने वालों के लिए गहरी नींद बहुत जरूरी है । तुम्हें चोट भी काफी आ गई है । सो जाओ ।'

मैंने कहा-'लेकिन शायद दूर बाग में चिड़ियों ने चहचहाना शुरू कर दिया है ।' मन ने समझाया-'ये चिड़ियाँ नहीं; बगलवाले कमरे में तुम्हारी पत्नी की चूड़ियाँ बोल रही हैं । उन्होंने करवट बदली होगी ।'

मैंने नींद की ओर कदम बढ़ाते हुए अनुभव किया, मन व्यंग्यपूर्वक हँस रहा था । मन बड़ा दुस्साहसी था ।

हर रोज की तरह सुबह साढ़े नौ बजे आँखें खुली । नाश्ते की टेबल पर मैंने ऐलान किया-'सुन लो कान खोलकर-पाँव की मोच ठीक होते ही मैं मोटापे के खिलाफ लड़ाई शुरू करूँगा; खाना बंद, दौड़ना और कसरत चालू ।' किसी पर मेरी धमकी का असर न हुआ । पत्नी ने तीसरी बार हलवे से पूरा प्लेट भरते हुए कहा-'घर में परहेज करते हो तो होटल में डटा लेते हो ।' मैंने कहा-'इस बार मैंने संकल्प किया है । जिस तरह ऋषि सिर्फ हवा-पानी से रहते हैं उसी तरह मैं भी रहूँगा ।' पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा-'खैर, जब तक मोच है तब तक खाओगे न ?' मैंने चौथी बार हलवा लेते हुए कहा- 'छोड़ने के पहले मैं भोजनानंद को चरम सीमा पर पहुँचा देना चाहता हूँ । इतना खा लूँ कि खाने की इच्छा ही न रह जाए । यह वाममार्गी कायदा है ।' उस रात नींद में मैंने पता नहीं कितने जोर से टेबल में ठोकर मारी थी कि पाँच महीने बीत गए पर मोच ठीक नहीं हुई । यों चलने-फिरने में कोई कष्ट न था मगर ज्यों ही खाना कम करने या व्यायाम करने का विचार मन में आता, बाएँ पैर के अँगूठे में टीस उठने लगती ।

एक दिन रिक्शे पर बाजार जा रहा था । देखा, फुटपाथ पर एक बूढ़ा वजन की मशीन सामने रखे, घंटी बजाकर लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रहा है । रिक्शा रोककर ज्यों ही मैंने मशीन पर एक पाँव रखा, तोल का काँटा पूरा चक्कर लगा कर अंतिम सीमा पर थरथराने लगा । मानो अपमानित कर रहा हो । बूढ़ा आतंकित होकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला-'दूसरा पाँव न रखिएगा महाराज ! इसी मशीन से पूरे परिवार की रोजी चलती है । आसपास के राहगीर हँस पड़े । मैंने पाँव पीछे खींच लिया ।'

मैंने मन से बिगड़ कर कहा-'मन साहब, सारी शरारत तुम्हारी है । तुममें दृढ़ता है ही नहीं । तुम साथ देते तो मोटापा दूर करने का मेरा संकल्प अधूरा न रहता ।' मन ने कहा-'भाई जी, मन तो शरीर के अनुसार होता है । मुझमें तुम दृढ़ता की आशा ही क्यों करते हो ?'

पठनीय

कवि रामावतार त्यागी की कविता 'प्रश्न किया है मेरे मन के मीत ने' पढ़िए ।

लेखनीय

मन और लेखक के बीच हुए किसी एक संवाद को संक्षिप्त में लिखिए ।

पाठ से आगे

'मन की एकाग्रता' के लिए आप क्या करते हैं; बताइए ।

शब्द संसार

चहल-कदमी (सं.) = घूमना-फिरना, टहलना
लिहाज (पुं.अ.) = आदर, लज्जा, शर्म
फीता (पु.फा.) = लंबाई नापने का साधन
विफल (वि.) = व्यर्थ, असफल
भुक्खड़ (पुं.) = हमेशा खाने वाला
मुग्दर (पुं.सं.) = कसरत का एक साधन

मुहावरे

कन्नी काटना = बचकर/ छुपकर निकलना
तिलमिला उठना = क्रोधित होना
सुर्खी कूटना = अपना महत्त्व बढ़ाना ।
नाक-भौं सिकौड़ना = अरुचि/अप्रसन्नता प्रकट करना
टीस उठना = दर्द का अनुभव होना

कहावतें

आस्तीन के साँप = अपनों में छिपा शत्रु
एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है = एक दुर्गुणी व्यक्ति पूरे वातावरण को दूषित करता है ।

पाठ के आँगन में

(१) सूची तैयार कीजिए :-

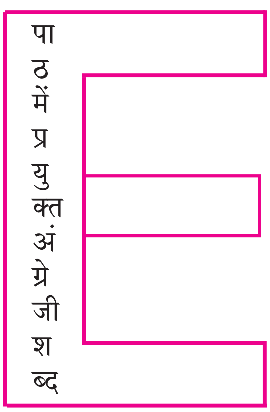

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :-

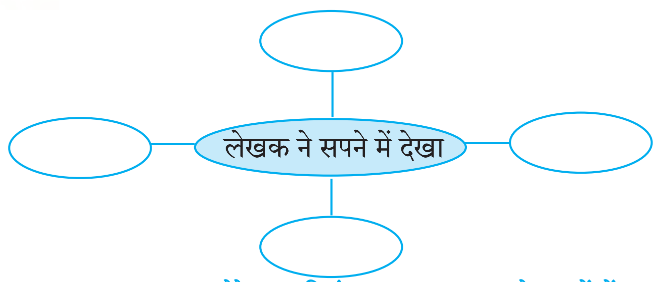

(३) 'मान जा मेरे मन' निबंध का आशय अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए ।

भाषा बिंदु

रेखांकित शब्द से उपसर्ग और प्रत्यय अलग करके लिखिए : उपसर्ग-प्रत्यय

☞ मन बड़ा दुस्साहसी था ।

उपसर्ग: दुः | मूलशब्द: साहस | प्रत्यय: ई

☞ गर्मी के कारण बेचैनी हो रही है ।

उपसर्ग | मूलशब्द | प्रत्यय

☞ असामाजिक गतिविधियों के कारण वह दंडित हुआ ।

☞ व्यक्ति को हमेशा परोपकारी वृत्ति रखनी चाहिए ।

☞ स्वाभिमानी व्यक्ति समाज में ऊँचा स्थान पाते हैं ।

☞ मानो मुझे अपमानित कर रहा हो ।

रचना बोध

....

....

....

५. किताबें कुछ कहना चाहती हैं

– सफदर हाश्मी

संभाषणीय

'वाचन प्रेरणा दिवस' के अवसर पर पढ़ी हुई किसी पुस्तक का आशय प्रस्तुत कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‍यार्थियों से पढ़ी हुई पुस्तकों के नाम और उनके विषय के बारे में पूछें । ● उनसे उनकी प्रिय पुस्तक और लेखक की जानकारी प्राप्त करें । ● पुस्तकों का वाचन करने से होने वाले लाभों पर चर्चा कराएँ ।

किताबें
करती हैं बातें
बीते जमानों की
आज की, कल की
एक–एक पल की
खुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की ।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है ।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ।

परिचय

जन्म : १२ अप्रैल १९५४ दिल्ली
मृत्यु : २ जनवरी १९८९ गाजियाबाद (उ.प्र.)
परिचय : सफदर हाश्मी नाटककार, कलाकार, निर्देशक, गीतकार और कलाविद थे ।
प्रमुख कृतियाँ : किताबें, मच्छर पहलवान, पिल्ला, राजू और काजू आदि प्रसिद्‍ध रचनाएँ हैं । 'दुनिया सबकी' पुस्तक में आपकी कविताएँ संकलित हैं ।

पद्‍य संबंधी

नई कविता : संवेदना के साथ मानवीय परिवेश के संपूर्ण वैविध्य को नए शिल्प में अभिव्यक्त करने वाली काव्यधारा है ।

प्रस्तुत कविता 'नई कविता' का एक रूप है । इस कविता में हाश्मी जी ने किताबों के माध्यम से मन की बातों का मानवीकरण करके प्रस्तुत किया है ।

https://youtu.be/o93x3rLtJpc

आसपास

अपने परिसर में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी देखिए और अपनी पसंद की एक पुस्तक खरीदकर पढ़िए ।

लेखनीय

हस्तलिखित पत्रिका का शुद्धीकरण करते हुए सजावट पूर्ण लेखन कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'ग्रंथ हमारे गुरु' इस विषय के संदर्भ में स्वमत बताइए ।

पठनीय

पाठ्यपुस्तक की किसी एक कविता के केंद्रीय भाव को समझते हुए मुखर एवं मौन वाचन कीजिए ।

श्रवणीय

अपनी मातृभाषा एवं हिंदी भाषा का कोई देशभक्तिपरक समूह गीत सुनाइए ।

पाठ के आँगन में

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :

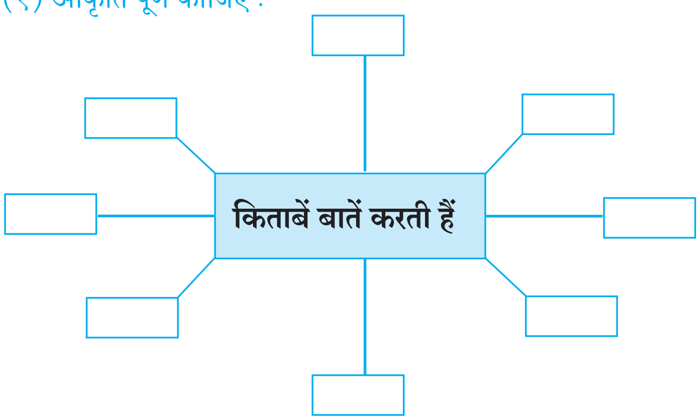

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

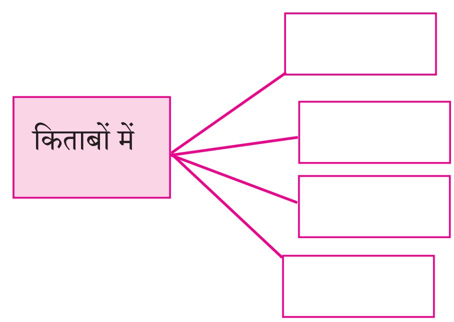

भाषा बिंदु

निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :

वाक्य-परिवर्तन

वर्तमान काल	किताबें कुछ कहना चाहती हैं ।	सामान्य
		पूर्ण
		अपूर्ण
भूत काल		सामान्य
		पूर्ण
		अपूर्ण
भविष्य काल		सामान्य

रचना बोध

....

....

....

६. 'इत्यादि' की आत्मकहानी

(पठनार्थ)

– यशोदानंद अखौरी

'शब्द-समाज' में मेरा सम्मान कुछ कम नहीं है । मेरा इतना आदर है कि वक्ता और लेखक लोग मुझे जबरदस्ती घसीट ले जाते हैं । दिन भर में, मेरे पास न जाने कितने बुलावे आते हैं । सभा-सोसाइटियों में जाते-जाते मुझे नींद भर सोने की भी छुट्टी नहीं मिलती । यदि मैं बिना बुलाए भी कहीं जा पहुँचता हूँ तो भी सम्मान के साथ स्थान पाता हूँ । सच पूछिए तो 'शब्द-समाज' में यदि मैं, 'इत्यादि' न रहता तो लेखकों और वक्ताओं की न जाने क्या दुर्दशा होती । पर हा ! इतना सम्मान पाने पर भी किसी ने आज तक मेरे जीवन की कहानी नहीं कही । संसार में जो जरा भी काम करता है उसके लिए लेखक लोग खूब नमक-मिर्च लगाकर पोथे के पोथे रँग डालते हैं; पर मेरे लिए एक सतर भी किसी की लेखनी से आज तक नहीं निकली । पाठक, इसमें एक भेद है ।

यदि लेखक लोग सर्व-साधारण पर मेरे गुण प्रकाशित करते तो उनकी योग्यता की कलई जरूर खुल जाती क्योंकि उनकी शब्द दरिद्रता की दशा में मैं ही उनका एक मात्र अवलंब हूँ । अच्छा, तो आज मैं चारों ओर से निराश होकर आप ही अपनी कहानी कहने और गुणावली गाने बैठा हूँ । पाठक, आप मुझे 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू' बनने का दोष न लगावें । मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ ।

अपने जन्म का सन-संवत मिती-दिन मुझे कुछ भी याद नहीं । याद है इतना ही कि जिस समय 'शब्द का महा अकाल' पड़ा था उसी समय मेरा जन्म हुआ था । मेरी माता का नाम 'इति' और पिता का 'आदि' है । मेरी माता अविकृत 'अव्यय' घराने की है । मेरे लिए यह थोड़े गौरव की बात नहीं हैं क्योंकि बड़ी कृपा से 'अव्यय' वंशवाले, प्रतापी महाराज 'प्रत्यय' के भी अधीन नहीं हुए । वे स्वाधीनता से विचरते आए हैं ।

मेरे बारे में किसी ने कहा था कि यह लड़का विख्यात और परोपकारी होगा; अपने समाज में यह सबका प्यारा बनेगा; मेरा नाम माता-पिता ने कुछ और नहीं रखा । अपने ही नामों को मिलाकर वे मुझे पुकारने लगे । इससे मैं 'इत्यादि' कहलाया । कुछ लोग प्यार में आकर पिता के नाम के आधार पर 'आदि' ही कहने लगे ।

पुराने जमाने में मेरा इतना नाम नहीं था । कारण यह कि एक तो लड़कपन में थोड़े लोगों से मेरी जान पहचान थी; दूसरे उस समय बुद्धिमानों के बुद्धि भंडार में शब्दों की दरिद्रता भी न थी । पर जैसे-जैसे

परिचय

परिचय : अखौरी जी 'भारत मित्र,' 'शिक्षा', 'विद्या विनोद, ' पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रह चुके हैं। आपके वर्णनात्मक निबंध विशेष रूप से पठनीय रहे हैं ।

गद्य संबंधी

वर्णनात्मक निबंध : इसमें लेखक ने 'इत्यादि' शब्द के उपयोग, सदुपयोग-दुरुपयोग के बारे में बताया है ।

मौलिक सृजन

'धन्यवाद' शब्द की आत्मकथा अपने शब्दों में लिखिए ।

शब्द दारिद्र्य बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा सम्मान भी बढ़ता गया । आजकल की बात मत पूछिए । आजकल मैं ही मैं हूँ । मेरे समान सम्मानवाला इस समय मेरे समाज में कदाचित विरला ही कोई ठहरेगा । आदर की मात्रा के साथ मेरे नाम की संख्या भी बढ़ चली है । आजकल मेरे अपने नाम हैं । भिन्न-भिन्न भाषाओं के'शब्द-समाज' में मेरे नाम भी भिन्न-भिन्न हैं । मेरा पहनावा भी भिन्न-भिन्न है-जैसा देश वैसा भेस बनाकर मैं सर्वत्र विचरता हूँ । आप तो जानते ही होंगे कि सर्वेश्वर ने हम 'शब्दों' को सर्वव्यापक बनाया है । इसी से मैं, एक ही समय, अनेक ठौर काम करता हूँ । इस घड़ी भारत की पंडित मंडली में भी विराजमान हूँ । जहाँ देखिए वहीं मैं परोपकार के लिए उपस्थित हूँ ।

क्या राजा, क्या रंक, क्या पंडित, क्या मूर्ख, किसी के घर जाने-आने में मैं संकोच नहीं करता; अपनी मानहानि नहीं समझता । अन्य 'शब्दों' में यह गुण नहीं । वे बुलाने पर भी कहीं जाने-आने में गर्व करते हैं; आदर चाहते हैं । जाने पर सम्मान का स्थान न पाने से रूठकर उठ भागते हैं । मुझमें यह बात नहीं है । इसी से मैं सबका प्यारा हूँ ।

परोपकार और दूसरे का मान रखना तो मानो मेरा कर्तव्य ही है । यह किए बिना मुझे एक पल भी चैन नहीं पड़ता । संसार में ऐसा कौन है जिसके, अवसर पड़ने पर, मैं काम नहीं आता ? निर्धन लोग जैसे भाड़े पर कपड़ा पहनकर बड़े-बड़े समाजों में बड़ाई पाते हैं, कोई उन्हें निर्धन नहीं समझता, वैसे ही मैं भी छोटे-छोटे वक्ताओं और लेखकों की दरिद्रता झटपट दूर कर देता हूँ । अब दो-एक दृष्टांत लीजिए ।

वक्ता महाशय वक्तृत्व देने को उठ खड़े हुए हैं । अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए सब शास्त्रों की बात थोड़ी-बहुत कहना चाहिए पर पन्ना भी उलटने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ । इधर-उधर से सुनकर दो-एक शास्त्रों और शास्त्रकारों का नाम भर जान लिया है । कहने को तो खड़े हुए हैं, पर कहें क्या ? अब लगे चिंता के समुद्र में डूबने-उतराने और मुँह पर रूमाल दिए खाँसते-खूँसते इधर-उधर ताकने । दो-चार बूँद पानी भी उनके मुखमंडल पर झलकने लगा । जो मुखकमल पहले उत्साह सूर्य की किरणों से खिल उठा था, अब ग्लानि और संकोच का पाला पड़ने से मुरझाने लगा । उनकी ऐसी दशा देख मेरा हृदय दया से उमड़ आया । उस समय मैं, बिना बुलाए, उनके लिए जा खड़ा हुआ । मैंने उनके कानों में चुपके से कहा ''महाशय, कुछ परवाह नहीं, आपकी मदद के लिए मैं हूँ । आपके जी में जो आवे प्रारंभ कीजिए; फिर तो मैं कुछ निबाह लूँगा ।'' मेरे ढाढ़स बँधाने पर बेचारे वक्ता जी के जी में जी आया । उनका मन फिर ज्यों का त्यों हरा-भरा हो उठा । थोड़ी देर के लिए जो उनके मुखड़े के आकाशमंडल में चिंता

पठनीय

हिंदी साहित्य की विविध विधाओं की जानकारी पढ़िए और उनकी सूची बनाइए ।

श्रवणीय

दूरदर्शन/रेडियो पर समाचार सुनिए और मुख्य समाचार सुनाइए ।

चिह्‌न का बादल दीख पड़ा था, वह एकबारगी फट गया। उत्साह का सूर्य फिर निकल आया । अब लगे वे यों वक्तृता झाड़ने-''महाशयो, धम्मशस्त्रकार, पुराणकार, दर्शनकारों ने कर्मवाद, इत्यादि जिन-जिन दार्शनिक तत्त्व रत्नों को भारत के भांडार में भरा है उन्हें देखकर मैक्समूलर इत्यादि पाश्चात्य पंडित लोग बड़े अंचभे में आकर चुप हो जाते हैं । इत्यादि-इत्यादि ।''

सुनिए और किसी समालोचक महाशय का किसी ग्रंथकार के साथ बहुत दिनों से मनमुटाव चला आ रहा है । जब ग्रंथकार की कोई पुस्तक समालोचना के लिए समालोचक साहब के आगे आई, तब वे बड़े प्रसन्न हुए, क्योंकि यह दाँव तो वे बहुत दिनों से ढूँढ़ रहे थे । पुस्तक को बहुत कुछ ध्यान देकर, उलटकर, उन्होंने देखा । कहीं किसी प्रकार का विशेष दोष पुस्तक में उन्हें न मिला । दो-एक साधारण छापे की भूलें निकलीं पर इससे तो सर्वसाधारण की तृप्ति नहीं होती। ऐसी दशा में बेचारे समालोचक महाशय के मन में मैं याद आ गया । वे झटपट मेरी शरण आए । फिर क्या है ? पौ बारह ! उन्होंने उस पुस्तक की यों समालोचना कर डाली- 'पुस्तक में जितने दोष हैं, उन सभी को दिखाकर, हम ग्रंथकार की अयोग्यता का परिचय देना तथा अपने पत्र का स्थान भरना, और पाठकों का समय खोना, नहीं चाहते । पर दो-एक साधारण दोष हम दिखा देते हैं; जैसे, ---- इत्यादि-इत्यादि ।'

पाठक, देखें ! समालोचक साहब का इस समय मैंने कितना बड़ा काम किया । यदि यह अवसर उनके हाथ से निकल जाता तो वे अपने मनमुटाव का बदला कैसे लेते ?

यह तो हुई बुरी समालोचना की बात । यदि भली समालोचना करने का काम पड़े, तो मेरे ही सहारे वे बुरी पुस्तक की भी ऐसी समालोचना कर डालते हैं कि वह पुस्तक सर्वसाधारण की आँखों में भली भासने लगती है और उसकी माँग चारों ओर से आने लगती है ।

कहाँ तक कहूँ । मैं मूर्ख को विद्‌वान बनाता हूँ । जिसे युक्ति नहीं सूझती उसे युक्ति सुझाता हूँ । लेखक को यदि भाव प्रकाशित करने को भाषा नहीं जुटती तो भाषा जुटाता हूँ । कवि को जब उपमा नहीं मिलती तो उपमा बताता हूँ । सच पूछिए तो मेरे पहुँचते ही अधूरा विषय भी पूरा हो जाता हैं । बस, क्या इतने से मेरी महिमा प्रकट नहीं होती ?

चलिए चलते-चलते आपको एक और बात बताता चलूँ । समय के साथ सब कुछ परिवर्तित होता रहता है । परिवर्तन संसार का नियम है । लोगों ने भी मेरे स्वरूप को संक्षिप्त करते हुए मेरा रूप परिवर्तित कर दिया है । अधिकांशतः मुझे 'आदि' के रूप में लिखा जाने लगा है । 'आदि' मेरा ही संक्षिप्त रूप है ।

संभाषणीय

अपने विद्‌यालय में मनाई गई खेल प्रतियोगिताओं में से किसी एक खेल का आँखों देखा वर्णन कीजिए ।

पाठ से आगे

आपके परिवार के किसी वेतनभोगी सदस्य की वार्षिक आय की जानकारी लेकर उनके द्‌वारा भरे जाने वाले आयकर की गणना कीजिए ।

गणित, कक्षा नौवीं भाग-१ पृष्ठ १००

शब्द संसार

विख्यात (वि.) = प्रसिद्ध
ठौर (पुं.सं.) = जगह
दृष्टांत (पुं.सं.) = उदाहरण
निबाह (पुं.सं.) = गुजारा, पालन
एक बारगी (क्रि.वि.) = एक बार में, अकस्मात, अचानक
समालोचना (स्त्री.सं.) = समीक्षा, आलोचना

मुहावरा

ढाढ़स बँधाना = धीरज बढ़ाना

भाषा बिंदु

संधि पढ़ो और समझो : –

संधि

१) सबको पता होता था कि वे **पुस्तकालय** में मिलेंगे ।
२) वे **सदैव** स्वाधीनता से विचर आए हैं ।
३. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा **प्रत्येक** का कर्तव्य है ।

पुस्तक + आलय = अ+ आ
सदा + एव = आ + ए
प्रति + एक = इ+ए

स्वर संधि

१) **उन्नति** एवं उत्कर्ष में दैनंदिनी का योगदान अतुल्य है।
२) **सम्मान** का स्थान न पाने से रूठकर भागते हैं ।
३. हर कार्य **सद्भावना** से करना चाहिए ।

उत् + नति = त् + न
सम् + मान = म् + मा
सत् + भावना = त् + भा

व्यंजन संधि

१) डायरी साहित्य की एक **निष्कपट** विधा है।
२) उसकी वही **दुर्बल** लड़की खड़ी है।
३) मित्र को चोट पहुँचाकर उसे बहुत **मनस्ताप** हुआ ।

निः + कपट = विसर्ग(:) का ष्
दुः + बल = विसर्ग(:) का र्
मन : + ताप = विसर्ग (:) का स्

विसर्ग संधि

संधि के भेद

संधि में दो ध्वनियाँ निकट आने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं ।

उपरोक्त उदाहरणों में (१) में पुस्तक+आलय, सदा+एव, प्रति+एक शब्दों में **दो स्वरों** के मेल से परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **स्वर संधि** हुई । उदाहरण (२) में उत्+नति, सम्+मान, सत्+भावना शब्दों में व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **व्यंजन संधि** हुई । उदाहरण (३) में विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन हुआ है । अतः यहाँ **विसर्ग संधि** हुई ।

रचना बोध

....
....
....

७. छोटा जादूगर

– *जयशंकर प्रसाद*

श्रवणीय

प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी सुनिए और प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● प्रेमचंद की कुछ कहानियों के नाम पूछें । ● प्रेमचंद जी का जीवन परिचय बताएँ । ● कहानी के मुख्य पात्रों के नाम श्यामपट्ट पर लिखवाएँ । ● कहानी की भावपूर्ण घटना कहलवाएँ । ● कहानी से प्राप्त सीख बताने के लिए प्रेरित करें ।

कॉर्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी । हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था । मैं खड़ा था । उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप देख रहा था । उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे । उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी । मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ । उसके अभाव में भी संपूर्णता थी । मैंने पूछा–''क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा ?''

''मैंने सब देखा है । यहाँ चूड़ी फेंकते हैं । खिलौनों पर निशान लगाते हैं । तीर से नंबर छेदते हैं । मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ । जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है । उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ, टिकट लगता है ।''

मैंने कहा–''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको ले चलूँ ।'' मैंने मन-ही-मन कहा–'भाई ! आज के तुम्हीं मित्र रहे ।'

उसने कहा–''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा ? चलिए, निशाना लगाया जाए ।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा–''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए ।'' उसने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया ।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गरम हो रही थी । हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले । रास्ते में ही उससे पूछा– ''तुम्हारे और कौन हैं ?''

''माँ और बाबूजी ।''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया ?''

''बाबू जी जेल में हैं ।''

'' क्यों ?''

'' देश के लिए ।'' वह गर्व से बोला ।

'' और तुम्हारी माँ ?''

'' वह बीमार हैं ।''

'' और तुम तमाशा देख रहे हो ?''

परिचय

जन्म : ३० जनवरी १८८९ वाराणसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** १५ नवंबर १९३७ वाराणसी (उ.प्र.)

परिचय : जयशंकर प्रसाद जी हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं । बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद जी कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : झरना, आँसू, लहर आदि (काव्य) कामायिनी (महाकाव्य), स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी (ऐतिहासिक नाटक), प्रतिध्वनि, आकाशदीप, इंद्रजाल आदि (कहानी संग्रह), कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास) ।

गद्य संबंधी

संवादात्मक कहानी : किसी विशेष घटना की रोचक ढंग से संवाद रूप में प्रस्तुति संवादात्मक कहानी कहलाती है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने लड़के जीवन संघर्ष और चातुर्यपूर्ण साहस को उजागर किया है ।

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी । उसने कहा-''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ । कुछ पैसा ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा । मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती ।''

मैं आश्चर्य में उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा ।

'' हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबू जी ! माँ जी बीमार हैं, इसलिए मैं नहीं गया ।''

'' कहाँ ?''

'' जेल में । जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ ।''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया । चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे । मन व्यग्र हो उठा । मैंने उससे कहा -''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए ।'' हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था । मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए ।

वह निकला पक्का निशानेबाज । उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई । देखने वाले दंग रह गए । उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे ? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिए गए।

लड़के ने कहा-''बाबू जी, आपको तमाशा दिखाऊँगा । बाहर आइए, मैं चलता हूँ ।'' वह नौ-दो ग्यारह हो गया । मैंने मन-ही-मन कहा-''इतनी जल्दी आँख बदल गई ।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया । पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा । झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा । अकस्मात किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा-''बाबू जी !''
मैंने पूछा-''कौन ?''
''मैं हूँ छोटा जादूगर ।''

: २ :

कोलकाता के सुरम्य बोटैनिकल उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी मनोहर झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था । बातें हो रही थीं । इतने में वही छोटा जादूगार दिखाई पड़ा । हाथ में चारखाने की खादी का झोला। साफ जांघिया और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी में बंधा हुआ था । मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा -''बाबू जी नमस्ते ! आज कहिए, तो खेल दिखाऊँ ।''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं ।''

''फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा, बाबू जी ?''

मौलिक सृजन

'माँ' विषय पर स्वरचित कविता प्रस्तुत कीजिए ।

आसपास

अपने विद्यालय के किसी समारोह का सूत्र संचालन कीजिए ।

‘‘नहीं जी-तुमको...,’’ क्रोध से मैं कुछ और कहने जा रहा था, श्रीमती ने कहा-‘‘दिखाओ जी, तुम तो अच्छे आए । भला, कुछ मन तो बहले ।’’ मैं चुप हो गया क्योंकि श्रीमती की वाणी में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता । उसने खेल आरंभ किया । उस दिन कॉर्निवाल के सब खिलौने खेल में अपना अभिनय करने लगे । भालू मनाने लगा । बिल्ली रूठने लगी । बंदर घुड़कने लगा । गुड़िया का ब्याह हुआ । गुड्डा वर सयाना निकला । लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था । सब हँसते-हँसते लोटपोट हो गए ।

मैं सोच रहा था ‘बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया । यही तो संसार है ।’

ताश के सब पत्ते लाल हो गए । फिर सब काले हो गए । गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुट गई । लट्टू अपने से नाच रहे थे । मैंने कहा-‘‘अब हो चुका । अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे ।’’ श्रीमती ने धीरे-से उसे एक रुपया दे दिया । वह उछल उठा । मैंने कहा-‘‘लड़के ।’’ ‘‘छोटा जादूगर कहिए । यही मेरा नाम है । इसी से मेरी जीविका है ।’’ मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती ने कहा-‘‘अच्छा, तुम इस रुपये से क्या करोगे ?’’ ‘‘पहले भर पेट पकौड़ी खाऊँगा । फिर एक सूती कंबल लूँगा ।’’ मेरा क्रोध अब लौट आया । मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा-‘ओह ! मैं कितना स्वार्थी हूँ । उसके एक रुपये पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था ।’ वह नमस्कार करके चला गया । हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले ।

: ३ :

उस छोटे-से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी । एक शांत वातावरण था । हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर जा रहे थे । रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण होता था । सचमुच वह झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़ा था । मैंने मोटर रोककर उससे पूछा-‘‘तुम यहाँ कहाँ ?’’ ‘‘मेरी माँ यहीं हैं न ? अब उसे अस्पतालवालों ने निकाल दिया है ।’’ मैं उतर गया । उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों में लदी हुई काँप रही थी । छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा-‘‘माँ !’’ मेरी आँखों में आँसू निकल पड़े ।

: ४ :

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी । मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था । कोलकाता से मन ऊब गया था । फिर भी चलते-चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई । साथ-ही-साथ जादूगर भी

पठनीय

पुस्तकालय/ अंतरजाल से उषा प्रियंवदा जी की ‘वापसी’ कहानी पढ़िए और सारांश सुनाइए ।

संभाषणीय

माँ के लिए छोटे जादूगर के किए हुए प्रयास बताइए ।

दिखाई पड़ जाता, तो और भी ... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा । जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे । मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था । मोटर रोककर उतर पड़ा । वहाँ बिल्ली रूठ रही थी । भालू मनाने चला था । ब्याह की तैयारी थी, सब होते हुए भी जादूगार की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था । मानो उसके रोयें रो रहे थे । मैं आश्चर्य से देख रहा था । खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा । वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया । मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा - '' आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा है आज तुरंत चले आना । मेरी घड़ी समीप है ।'' अविचल भाव से उसने कहा । ''तब भी तुम खेल दिखाने चले आए ।'' मैंने कुछ क्रोध से कहा । मनुष्य के सुख-दुख का माप अपना ही साधन तो है । उसी के अनुपात से वह तुलना करता है ।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी । उसने कहा- ''क्यों न आता ?'' और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था ।

क्षण-क्षण में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई । उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा-''जल्दी चलो ।'' मोटरवाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा ।

मैं कुछ ही मिनटों में झोंपड़े के पास पहुँचा । जादूगर दौड़कर झोंपड़े में 'माँ-माँ' पुकारते हुए घुसा । मैं भी पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से, 'बे...' निकलकर रह गया । उसके दुर्बल हाथ उठकर गिरे । जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था । उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा ।

शब्द संसार

विषाद (पुं.सं.) = दुख, जड़ता निश्चेष्टता
हिंडोले/हिंडोला (पुं.सं.) = झूला
जलपान (पुं.सं.) = नाश्ता
घुड़कना (क्रि.) = डाँटना
वाचालता (भाव.सं.) = अधिक बोलना
जीविका (स्त्री.सं.) = रोजी-रोटी
ईर्ष्या (स्त्री.सं.) = द्‌वेष, जलना
चिथड़ा (पुं.सं.) = फटा पुराना कपड़ा
चेष्टा (सं. स्त्री.) = प्रयत्न
समीप (क्रि.वि.) (सं.) = पास निकट, नजदीक
अनुपात (पुं.सं.) = प्रमाण, तुलनात्मक
समग्र (वि.) = संपूर्ण

मुहावरे

दंग रहना = चकित होना
मन ऊब जाना = उकता जाना

पाठ के आँगन में

मैं हूँ यहाँ

Acharya Jagadish Chandra Bose Indian Botanic Garden – Wikipedia

(१) विधानों को सही करके लिखिए :-

(क) ताश के सब पत्ते पीले हो गए थे ।

(ख) खेल हो जाने पर चीजें बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा ।।

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :

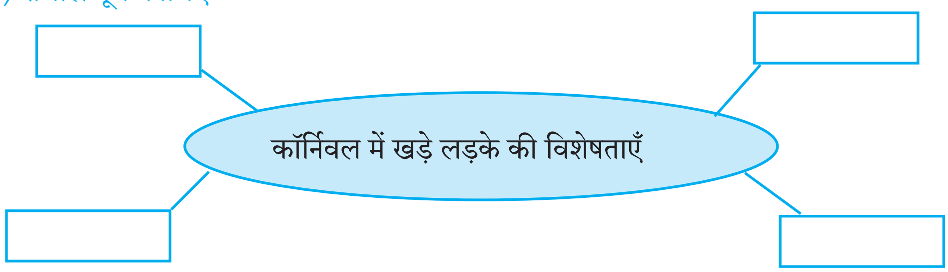

(३) छोटा जादूगर कहानी में आए पात्र :

(४) 'पात्र' शब्द के दो अर्थ : (क) .... (ख) ....

पाठ से आगे

सियारामशरण गुप्त जी द्वारा लिखित 'काकी' पाठ के भावपूर्ण प्रसंग को शब्दांकित कीजिए ।

भाषा बिंदु

रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय शब्दों से कीजिए और नया वाक्य बनाइए :

१. जहाँ एक लड़का ——— देख रहा था । ....

२. मैं उसकी ——— न जाने क्यों आकर्षित हुआ ।...

३. ——— ! मैं सच कहता हूँ बाबू जी । ....

४. ——— किसी ने ——— के हिंडोले से पुकारा। ....

५. मैं ——— बुलाए भी कहीं जा पहुँचता हूँ । ....

६. लेखकों ——— वक्ताओं की न जाने क्या दुर्दशा होती । ....

७. ———! क्या बात । ....

८. वह बाजार गया ——— उसे किताब खरीदनी थी । ....

रचना बोध

....

....

....

८. जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार ...!

– प्रा. संतोष मडकी

लेखनीय

किसी सफल साहित्यकार का साक्षात्कार लेने हेतु चर्चा करते हुए प्रश्नावली तैयार कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● साहित्यकार से मिलने का समय और अनुमति लेने के लिए कहें । ● उनके बारे में जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रेरित करें । ● साक्षात्कार संबंधी सामग्री उपलब्ध कराएँ । ● विद्‌यार्थियों से प्रश्न निर्मिति करवाएँ ।

रुला तो देती है हमेशा हार,
पर अंदर से बुलंद बनाती है हार ।
किनारों से पहले मिले मझधार
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

फूलों के रास्तों को मत अपनाओ ,
और वृक्षों की छाया से रहो परे ।
रास्ते काँटों के बनाएँगे निडर
और तपती धूप ही लाएगी निखार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

सरल राह तो कोई भी चले,
दिखाओ पर्वत को करके पार ।
आएगी हौसलों में ऐसी ताकत,
सहोगे तकदीर का हर प्रहार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

परिचय

जन्म : २५ दिसंबर १९७६ सोलापुर (महाराष्ट्र)
परिचय : श्री मडकी इंजीनियरिंग कॉलेज में सहप्राध्यापक हैं । आपको हिंदी, मराठी भाषा से बहुत लगाव है ।
रचनाएँ : गीत और कविताएँ, शोध निबंध आदि ।

पद्‌य संबंधी

नवगीत : प्रस्तुत कविता में कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि जीवन में हार एवं असफलता से घबराना नहीं चाहिए। जीवन में हार से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए ।

✻ उजालों की आस तो जायज है,
पर अँधेरों को अपनाओ तो एक बार ।
बिन पानी के बंजर जमीन पे,
बरसाओ मेहनत की बूँदों की फुहार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

जीत का आनंद भी तभी होगा,
जब हार की पीड़ा सही हो अपार ।
आँसू के बाद बिखरती मुस्कान,
और पतझड़ के बाद मजा देती है बहार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... ! ✻

आभार प्रकट करो हर हार का,
जिसने जीवन को दिया सँवार ।
हर बार कुछ सिखाकर ही गई,
सबसे बड़ी गुरु है हार ।।
जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार .... !

✻ पद्यांश पर आधारित कृतियाँ

(१) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :-
(क) कवि ने इसे पार करने के लिए कहा है- नदी/पर्वत/सागर
(ख) कवि ने इसे अपनाने के लिए कहा है-अँधेरा/उजाला/सबेरा
(२) लय-संगीत निर्माण करने वाली दो शब्दजोड़ियाँ लिखिए ।
(३) 'जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

बुलंद (वि.फा.) = ऊँचा, उच्च
मझधार (स्त्री.) = धारा के बीच में, मध्यभाग में
हौसला (पुं.) = उत्कंठा
बंजर (पुं. वि) = ऊसर, अनुपजाऊ
फुहार (स्त्री.सं.) = हलकी बौछार/वर्षा

कल्पना पल्लवन

'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' इस विषय पर भाषाई सौंदर्यवाले वाक्यों, सुवचन, दोहे आदि का उपयोग करके निबंध/कहानी लिखिए ।

श्रवणीय

यू ट्यूब से मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'नर हो न निराश करो मन को' सुनिए और उसका आशय अपने शब्दों में लिखिए ।

पठनीय

रामवृक्ष बेनीपुरी द्‌वारा लिखित 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध पढ़िए और उसका आकलन कीजिए ।

संभाषणीय

पाठ्येतर किसी कविता की उचित आरोह-अवरोह के साथ भावपूर्ण प्रस्तुति कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) 'हर बार कुछ सिखाकर ही गई, सबसे बड़ी गुरु है हार' इस पंक्ति द्‌वारा आपने जाना ....

(२) कविता के दूसरे चरण का भावार्थ लिखिए ।

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :-

(क) फूलों के रास्ते
(ख) जीत का आनंद मिलेगा
(ग) बहार
(घ) गुरु

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :

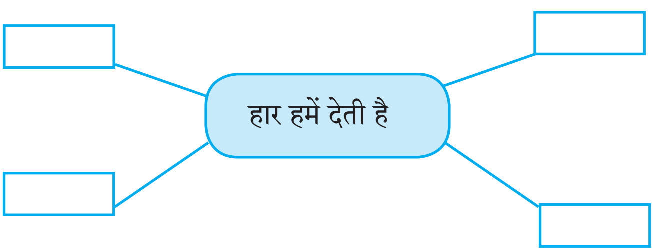

(५) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :-

(क) कवि ने इसे अपनाने के लिए कहा है- अँधेरा/उजाला
(ख) पतझड़ के बाद मजा देती है-फुहार/बहार/बौछार

(२) लय संगीत निर्माण करनेवाली दो शब्द जोड़ियाँ लिखिए ।

(३) 'जिंदगी की बड़ी जरूरत है हार' अपने विचार लिखिए ।

(६)आकृति पूर्ण कीजिए :

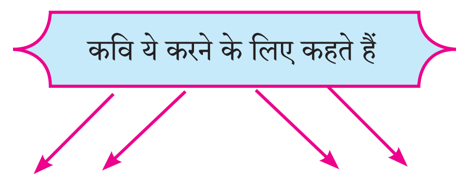

भाषा बिंदु

निम्नलिखित अशुद्‌ध वाक्यों को शुद्‌ध करके फिर से लिखिए :- शुद्‌ध-वाक्य

अशुद्‌ध वाक्य	शुद्‌ध वाक्य
१. वृक्षों का छाया से रहे परे ।	१. ________
२. पतझड़ के बाद मजा देता है बहार ।	२. ________
३. फूल के रास्ते को मत अपनाओ ।	३. ________
४. किनारों से पहले मिला मझधार ।	४. ________
५. बरसाओं मेहनत का बूँदों का फुहार ।	५. ________
६. जिसने जीवन का दिया सँवार ।	६. ________

रचना बोध

....
....
....

१. गागर में सागर

-बिहारी

श्रवणीय

किसी संत कवि के पद/दोहों का आनंदपूर्वक रसास्वादन करते हुए श्रवण कीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- संत कवियों के नाम पूछें । ● उनकी पसंद के संत कवि का चुनाव करने के लिए कहें ।
- पसंद के संत कवि के पद/दोहों का सी.डी. से रसास्वादन करते हुए श्रवण करने के लिए कहें ।
- कोई पद/दोहा सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ ।।

घरु-घरु डोलत दीन ह्‌वै, जुन-जनु जाचतु जाइ ।
दियैं लोभ-चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ों लखाइ ।।

कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाए बौराइ जगु, इहिं पाए बौराइ ।।

गुनी-गुनी सबके कहैं, निगुनी गुनी न होतु ।
सुन्यौ कहूँ तरू अर्क तै, अर्क समान उदोतु

नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जै तो नीचौ ह्‌वै चलै, ते तौ ऊँचौ होइ ।।

अति अगाधु अति औथरौ, नदी कूप सरु बाइ ।
सो ताकौ सागरु जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ ।।

बुरौ बुराई जो तजै, तौ चितु खरौ सकातु ।
ज्यौं निकलंक मयंकु लखि, गनैं लोग उतपातु ।।

समै-समै सुंदर सबै, रूप-कुरूप न कोइ ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ।।

परिचय

जन्म : सन १५९५ के लगभग ग्वालियर में हुआ । **मृत्यु :** १६६४ में हुई । बिहारी ने नीति और ज्ञान के दोहों के साथ - साथ प्रकृति चित्रण भी बहुत ही सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : बिहारी की एकमात्र रचना सतसई है । इसमें ७१९ दोहे संकलित हैं। सभी दोहे सुंदर और सराहनीय हैं ।

पद्‌य संबंधी

दोहे : इसका प्रथम और तृतीय चरण १३-१३ तथा द्‌वितीय और चतुर्थ चरण ११-११ मात्राओं का होता है ।

प्रस्तुत दोहों में कविवर बिहारी ने व्यावहारिक जगत की कतिपय नीतियों से अवगत कराया है ।

शब्द संसार

बौराइ (स्त्री.सं.) = पागल होना, बौराना
निगुनी (वि.) = जिसमे गुण नहीं
अर्क (पुं.सं.) = रस, सूर्य
उदोतु (पु.सं.) = प्रकाशित
अरु (अव्य.) = और
अगाधु (वि.) = अगाध
सरु (पुं.सं) = सरोवर
निकलंक (वि.) = निष्कलंक, दोषरहित
मयंकु (पुं.सं.) = चंद्रमा
उतपातु (पु.सं.) = आफत, मुसीबत

पठनीय

अन्य नीतिपरक दोहों का अपने पूर्वज्ञान तथा अनुभव के साथ मूल्यांकन करें एवं उनसे सहसंबंध स्थापित करते हुए वाचन कीजिए ।

लेखनीय

अपने अनुभव वाले किसी विशेष प्रसंग को प्रभावी एवं क्रमबद्ध रूप में लिखिए ।

कल्पना पल्लवन

'निंदक नियरे राखिए' इस पंक्ति के बारे में अपने विचार लिखिए ।

आसपास

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्यकारों की जानकारी पुस्तकालय, अंतरजाल आदि के द्वारा प्राप्त कर चर्चा करें तथा उनकी हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/Y_yRsbfbf9I

पाठ के आँगन में

(१) 'नर की अरु नल नीर की ....' इस दोहे द्वारा प्राप्त संदेश स्पष्ट कीजिए ।

२) शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

(क) घरु = ☐ (ख) उज्जलु = ☐

पाठ से आगे

दोहे प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता में अर्थसहित दोहे प्रस्तुत कीजिए ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित मुहावरों, कहावतों में गलत शब्दों के स्थान पर सही शब्द लिखकर उन्हें पुनः लिखिए :-

मुहावरे - कहावतें

१. टोपी पहनना	१. ....
२. गीत न जाने आँगन टेढ़ा	२. ....
३. अदरक क्या जाने बंदर का स्वाद ।	३. ....
४. कमर का हार	४. ....
५. नाक की किरकिरी होना	५. ....
६. गेहूँ गीला होना	६. ....
७. अब पछताए होत क्या जब बंदर चुग गए खेत ।	७. ....
८. दिमाग खोलना ।	८. ....

रचना बोध

....

....

....

२. मैं बरतन माँजूँगा

– हमराज भट्‌ट 'बालसखा'

मौलिक सृजन

'नम्रता होती है जिनके पास, उनका ही होता दिल में वास ।' इस विषय पर अन्य सुवचन तैयार कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- 'नम्रता' आदर भाव पर चर्चा करवाएँ । • विद्‌यार्थियों को एक दूसरे का व्यवहार/स्वभाव का निरीक्षण करने के लिए कहें । • 'नम्रता' विषय पर सुवचन बनवाएँ ।

बचपन में कोर्स से बाहर की कोई पुस्तक पढ़ने की आदत नहीं थी । कोई पत्र-पत्रिका या किताब पढ़ने को मिल नहीं पाती थी । गुरु जी के डर से पाठ्‌यक्रम की कविताएँ मैं रट लिया करता था । कभी अन्य कुछ पढ़ने की इच्छा हुई तो अपने से बड़ी कक्षा के बच्चों की पुस्तकें पलट लिया करता था । पिता जी महीने में एक-दो पत्रिका या किताब अवश्य खरीद लाते थे किंतु वह उनके ही स्तर की हुआ करती थी । इसे पलटने की हमें मनाही हुआ करती थी । अपने बचपन में तीव्र इच्छा होते हुए भी कोई बालपत्रिका या बच्चों की किताब पढ़ने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला ।

आठवीं पास करके जब नौवीं कक्षा में भरती होने के लिए मुझे गाँव से दूर एक छोटे शहर भेजने का निश्चय किया गया तो मेरी खुशी का पारावार न रहा । नई जगह, नए लोग, नए साथी, नया वातावरण, घर के अनुशासन से मुक्त, अपने ऊपर एक जिम्मेदारी का एहसास, स्वयं खाना बनाना, खाना, अपने बहुत से काम खुद करने की शुरुआत-इन बातों का चिंतन भीतर-ही-भीतर आह्‌लादित कर देता था । माँ, दादी और पड़ोस के बड़ों की बहुत सी नसीहतों और हिदायतों के बाद मैं पहली बार शहर पढ़ने गया। मेरे साथ गाँव के दो साथी और थे । हम तीनों ने एक साथ कमरा लिया और साथ-साथ रहने लगे ।

हमारे ठीक सामने तीन अध्यापक रहते थे-पुरोहित जी जो हमें हिंदी पढ़ाते थे; खान साहब बहुत विद्‌वान और संवेदनशील अध्यापक थे । यों वह भूगोल के अध्यापक थे किंतु संस्कृत छोड़कर वे हमें सारे विषय पढ़ाया करते थे । तीसरे अध्यापक विश्वकर्मा जी थे जो हमें जीव-विज्ञान पढ़ाया करते थे ।

गाँव से गए हम तीनों विद्‌यार्थियों में उन तीनों अध्यापकों के बारे में पहली चर्चा यह रही कि वे तीनों साथ-साथ कैसे रहते और बनाते-खाते हैं । जब यह ज्ञान हो गया कि शहर में गाँवों जैसा ऊँच-नीच, जात-पाँत का भेदभाव नहीं होता, तब उन्हीं अध्यापकों के बारे में एक दूसरी चर्चा हमारे बीच होने लगी ।

परिचय

हमराज भट्‌ट की बालसुलभ रचनाएँ बहुत प्रसिद्‌ध हैं । आपकी कहानियाँ, निबंध, संस्मरण विविध पत्र-पत्रिकाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान पाते रहते हैं ।

गद्‌य संबंधी

आत्मकथात्मक कहानी : इसमें स्वयं या कहानी का कोई पात्र 'मैं' के माध्यम से पूरी कहानी का आत्म चित्रण करता है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने समय की बचत, समय के उचित उपयोग एवं अध्ययनशीलता जैसे गुणों को दर्शाया है ।

होता यह था कि विश्वकर्मा सर रोज सुबह-शाम बरतन माँजते हुए दिखाई देते । खान साहब या पुरोहित जी को हमने कभी बरतन धोते नहीं देखा । विश्वकर्मा जी उम्र में सबसे छोटे थे । हमने सोचा कि शायद इसीलिए उनसे बरतन धुलवाए जाते हैं और स्वयं दोनों गुरु जी खाना बनाते हैं; लेकिन वे बरतन माँजने के लिए तैयार होते क्यों हैं ? हम तीनों में तो बरतन माँजने के लिए रोज ही लड़ाई हुआ करती थी । मुश्किल से ही कोई बरतन धोने के लिए राजी होता ।

✲ विश्वकर्मा सर को और शौक था-पढ़ने का । मैं उन्हें जब भी देखता, पढ़ते हुए देखता । गजब के पढ़ाकू थे वे । एकदम किताबी कीड़ा । धूप सेंक रहे हैं तो हाथों में किताब खुली है । टहल रहे हैं तो पढ़ रहे हैं । स्कूल में भी खाली पीरियड में उनकी मेज पर कोई-न-कोई पुस्तक खुली रहती । विश्वकर्मा सर को ढूँढ़ना हो तो वो पुस्तकालय में मिलेंगे । वे तो खाते समय भी पढ़ते थे ।

उन्हें पढ़ते देखकर मैं बहुत ललचाया करता था । उनके कमरे में जाने और उनसे पुस्तकें माँगने का साहस नहीं होता था कि कहीं घुड़क न दें कि कोर्स की किताबें पढ़ा करो । बस, उन्हें पढ़ते देखकर, उनके हाथों में रोज नई-नई पुस्तकें देखकर मैं ललचाकर रह जाता था । कभी-कभी मन करता कि जब बड़ा होऊँगा तो गुरु जी की तरह ढेर सारी किताबें खरीद लाऊँगा और ठाट से पढ़ूँगा । तब कोर्स की किताबें पढ़ने का झंझट नहीं होगा । ✲

एक दिन धुले बरतन भीतर ले जाने के बहाने मैं उनके कमरे में चला गया । देखा तो पूरा कमरा पुस्तकों से भरा था । उनके कमरे में आलमारी नहीं थी इसलिए उन्होंने जमीन पर ही पुस्तकों की ढेरियाँ बना रखी थीं । कुछ चारपाई पर, कुछ तकिया के पास और कुछ मेज पर करीने से रखी हुई थीं । मैंने बरतन एक ओर रखे और स्वयं उस पुस्तक प्रदर्शनी में खो गया । मुझे गुरु जी का ध्यान ही नहीं रहा जो मेरे साथ ही खड़े मुझे देखकर मंद-मंद मुसकरा रहे थे ।

मैंने एक पुस्तक उठाई और इत्मीनान से उसका एक-एक पृष्ठ पलटने लगा ।

गुरु जी ने पूछा, ''पढ़ोगे ?''

मेरा ध्यान टूटा । ''जी पढ़ूँगा ।'' मैंने कहा ।

उन्होंने तत्काल छाँटकर एक पतली पुस्तक मुझे दी और कहा, ''इसे पढ़कर लौटा देना और दूसरी ले जाते रहना ।''

मेरे हाथ जैसे कोई बहुत बड़ा खजाना लग गया हो । वह पुस्तक मैंने एक ही रात में पढ़ डाली । उसके बाद गुरु जी से लेकर पुस्तकें पढ़ने का मेरा क्रम चल पड़ा ।

मेरे साथी मुझे चिढ़ाया करते थे कि मैं इधर-उधर की पुस्तकों

✲ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए

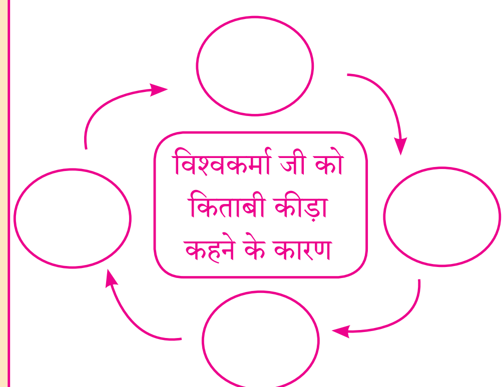

(२) डाँटना इस अर्थ में आया हुआ मुहावरा लिखिए ।

(३) परिच्छेद पढ़कर प्राप्त होने वाली प्रेरणा लिखिए ।

आसपास

दूसरे शहर-गाँव में रहने वाले अपने मित्र को विद्यालय के अनुभव सुनाइए ।

से समय बरबाद करता हूँ किंतु वे मुझे पढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे । वे कहते, ''जब कोर्स की पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ऊब जाओ तब झट कोई बाहरी रुचिकर पुस्तक पढ़ा करो । विषय बदलने से दिमाग में ताजगी आ जाती है ।''

इस प्रयोग से पढ़ने में मेरी भी रुचि बढ़ गई और विषय भी याद रहने लगे । वे स्वयं मुझे ढूँढ़-ढूँढ़कर किताबें देते । पुस्तक के बारे में बता देते कि अमुक पुस्तक में क्या-क्या पठनीय है । इससे पुस्तक को पढ़ने की रुचि और बढ़ जाती थी । कई पत्रिकाएँ उन्होंने लगवा रखी थीं, उनमें बाल पत्रिकाएँ भी थीं । उनके साथ रहकर बारहवीं कक्षा तक मैंने खूब स्वाध्याय किया ।

धीरे-धीरे हम मित्र हो गए थे । अब मैं निःसंकोच उनके कमरे में जाता और जिस पुस्तक की इच्छा होती, पढ़ता और फिर लौटा देता ।

उनका वह बरतन धोने का क्रम ज्यों-का-त्यों बना रहा । अब उनके साथ मेरा संकोच बिलकुल दूर हो गया था । एक दिन मैंने उनसे पूछा, ''सर ! आप केवल बरतन ही क्यों धोते हैं ? दोनों गुरु जी खाना बनाते हैं और आपसे बरतन धुलवाते हैं । यह भेदभाव क्यों ?''

वे थोड़ा मुस्काए और बोले, ''कारण जानना चाहोगे ?''

मैंने कहा, ''जी ।''

उन्होंने पूछा, ''भोजन बनाने में कितना समय लगता है ?''

मैंने कहा, ''करीब दो घंटे ।''

''और बरतन धोने में ?

मैंने कहा, ''यही कोई दस मिनट ।''

''बस यही कारण है ।'' उन्होंने कहा और मुस्कुराने लगे । मेरी समझ में नहीं आया तो उन्होंने विस्तार से समझाया, ''देखो ! कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता । मैं बरतन इसलिए धोता हूँ क्योंकि खाना बनाने में पूरे दो घंटे लगते हैं और बरतन धोने में सिर्फ दस मिनट । ये लोग रसोई में दो घंटे काम करते हैं, स्टोव का शोर सुनते हैं और धुआँ अलग से सूँघते हैं । मैं दस मिनट में सारा काम निबटा देता हूँ और एक घंटा पचास मिनट की बचत करता हूँ और इतनी देर पढ़ता हूँ । जब-जब हम तीनों में काम का बँटवारा हुआ तो मैंने ही कहा कि मैं बरतन माँजूँगा । वे भी खुश और मैं भी खुश ।''

उनका समय बचाने का यह तर्क मेरे दिल को छू गया । उस दिन के बाद मैंने भी अपने साथियों से कहा कि मैं दोनों समय बरतन धोया करूँगा । वे खाना पकाया करें । वे तो खुश हो गए और मुझे मूर्ख समझने लगे, जैसे हम विश्वकर्मा सर को समझते थे लेकिन मैं जानता था कि मूर्ख कौन है ।

पठनीय

नीतिपरक पुस्तकें पढ़िए । पाठ्यपुस्तक के अलावा अपने सहपाठियों एवं स्वयं द्वारा पढ़ी हुई पुस्तकों की सूची बनाइए ।

लेखनीय

'कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता' इस पर एक प्रसंग लिखकर उसे कक्षा में सुनाइए ।

श्रवणीय

आकाशवाणी से प्रसारित होने वाला एकांकी सुनिए ।

पाठ के आँगन में

(१) कारण लिखिए :-

(क) मित्रों द्‌वारा मूर्ख समझे जाने पर भी लेखक महोदय खुश थे क्योंकि ....

(ख) पुस्तकों की ढेरियाँ बना रखी थी क्योंकि ....

(२) 'अध्यापक के साथ विद्‌यार्थी का रिश्ता' विषय पर स्वमत लिखिए ।

(३) संजाल पूर्ण करो :

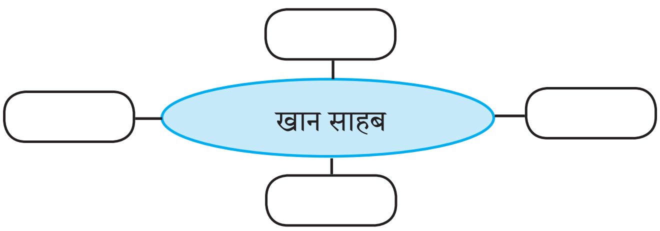

शब्द संसार

एहसास (पुं.) = आभास
नसीहत (स्त्री.) = उपदेश/सीख
हिदायत (स्त्री.) = निर्देश, सूचना
कौर (पु.सं) = ग्रास, निवाला
इत्मीनान (पु.अ.) = संतोष

मुहावरा

घुड़क देना = जोर से बोलकर डराना, डाँटना

पाठ से आगे

'स्वयं अनुशासन' पर कक्षा में चर्चा कीजिए तथा इससे संबंधित तक्तियाँ बनाइए ।

भाषा बिंदु

रचना की दृष्टि से वाक्य पहचानकर अन्य एक वाक्य लिखिए

(१) जब पाठ्यक्रम की पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ऊब जाओ तब झट कोई बाहरी रुचिकर पुस्तक पढ़ा करो ।

(२) ---

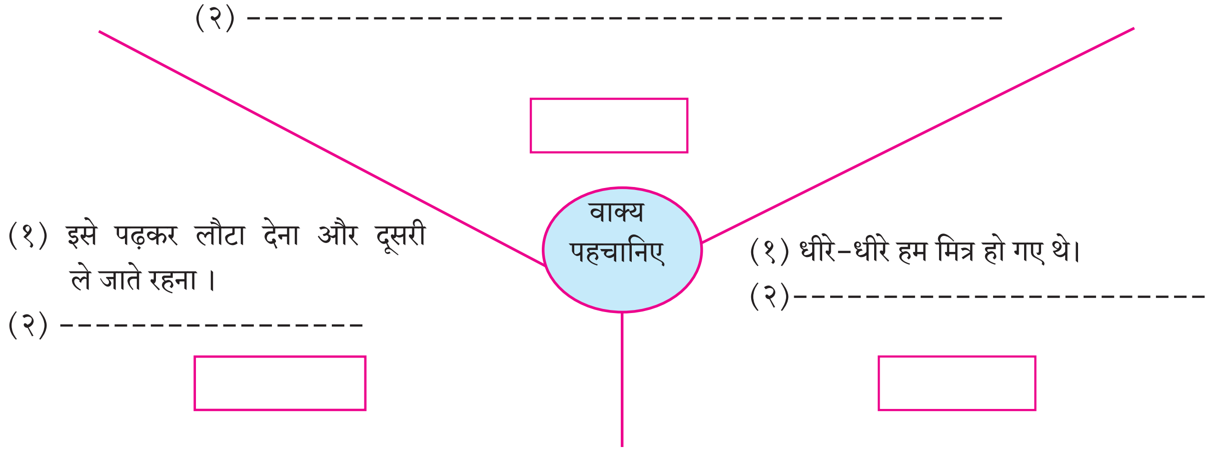

रचना बोध

....

....

....

३. ग्रामदेवता

– डॉ. रामकुमार वर्मा

(पठनार्थ)

हे ग्रामदेवता नमस्कार !
सोने–चाँदी से नहीं किंतु
तुमने मिट्‌टी से किया प्यार
हे ग्रामदेवता नमस्कार !

जन कोलाहल से दूर
कहीं एकाकी सिमटा–सा निवास
रवि –शशि का उतना नहीं
कि जितना प्राणों का होता प्रकाश ।

श्रमवैभव के बल पर करते
हो जड़ में चेतन का विकास
दानों–दानों से फूट रहे
सौ–सौ दानों के हरे हास ।

यह है न पसीने की धारा,
यह गंगा की है धवल धार ।
हे ग्रामदेवता नमस्कार !

जो है गतिशील सभी ऋतु में
गर्मी, वर्षा हो या कि ठंड,
जग को देते हो पुरस्कार
देकर अपने को कठिन दंड ।

परिचय

जन्म : १५ सितंबर १९०५ सागर (म.प्र.)।
मृत्यु : १९९०
परिचय: डॉ. रामकुमार वर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्‌ध कवि, एकांकी–नाटककार, लेखक और आलोचक हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : वीर हमीर, चित्तौड़ की चिंता, निशीथ, चित्ररेखा आदि (काव्य संग्रह), रेशमी टाई, रूपरंग, चार ऐतिहासिक एकांकी आदि (एकांकी संग्रह) एकलव्य, उत्तरायण आदि (नाटक) ।

पद्‌य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, हृदय की कोमल अनुभूतियों का साकार रूप कविता है ।

इस कविता में वर्मा जी ने कृषकों को ग्रामदेवता बताते हुए उनके परिश्रमी, त्यागी एवं परोपकारी किंतु कठिन जीवन को रेखांकित किया है ।

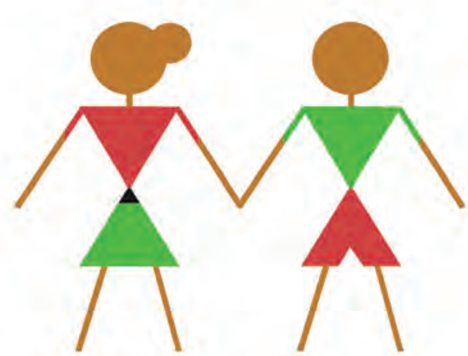

झोंपड़ी झुकाकर तुम अपनी
ऊँचे करते हो राजद्‌वार ।
हे ग्रामदेवता नमस्कार !× × × ×

तुम जन-गन-मन अधिनायक हो,
तुम हँसो कि फूले-फले देश,
आओ, सिंहासन पर बैठो
यह राज्य तुम्हारा है अशेष ।

उर्वरा भूमि के नए खेत
के नए धान्य से सजे वेश,
तुम भू पर रह कर भूमि भार
धारण करते हो मनुजशेष ।

अपनी कविता से आज तुम्हारी
विमल आरती लूँ उतार
हे ग्रामदेवता नमस्कार !

शब्द संसार

हास (पुं.) = हँसी
धवल (वि.) = शुभ्र
अशेष (वि.) = बाकी न हो
उर्वरा (वि.) = उपजाऊ
मनुज (पु.सं.) = मानव
विमल (वि.) = धवल

मुहावरा

आरती उतारना = आदर करना/स्वागत करना

कल्पना पल्लवन

'सबकी प्यारी, सबसे न्यारी मेरे देश की धरती' इस पर अपने विचार लिखिए ।

श्रवणीय

ग्रामीण जीवन पर आधारित विविध भाषाओं के लोकगीत सुनिए और सुनाइए ।

पठनीय

कविवर निराला जी की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता पढ़िए तथा उसका भाव स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

'प्राकृतिक सौंदर्य का सच्चा आनंद आँचलिक (ग्रामीण) क्षेत्र में ही मिलता है', चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

किसी ऐतिहासिक स्थल की सुरक्षा हेतु आपके द्‌वारा किए जाने वाले प्रयत्नों के बारे में लिखिए ।

आसपास

'किसी कृषक से प्रत्यक्ष वार्तालाप करते हुए उसका महत्त्व बताइए :-

पाठ से आगे

'ऑरगैनिक' (सेंद्रिय) खेती की जानकारी प्राप्त कीजिए और अपनी कक्षा में सुनाइए ।

रचना बोध

....
....
....

४. साहित्य की निष्कपट विधा है-डायरी

– कुबेर कुमावत

मौखिक 'दैनंदिनी लिखने के लाभ' विषय पर चर्चा में अपने मत व्यक्त कीजिए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● दैनंदिनी के बारे में प्रश्न पूछें । ● दैनंदिनी में क्या-क्या लिखते हैं; बताने के लिए कहें । ● अपनी गलती अथवा असफलता को कैसे लिखा जाता है, इसपर चर्चा कराएँ । ● किसी महान विभूति की डायरी पढ़ने के लिए कहें ।

डायरी हिंदी गद्य साहित्य की सबसे अधिक पुरानी परंतु दिन प्रतिदिन नई होती चलने वाली विधा है । हिंदी की आधुनिक गद्य विधाओं में अर्थात उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक,आत्मकथा आदि की तुलना में इसे सबसे अधिक पुरानी माना जा सकता है और इसके प्रमाण भी हैं । यह विधा नई इस अर्थ में है कि इसका संबंध मनुष्य के दैनंदिन जीवनक्रम के साथ घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है । इसे अपनी भाषा में हम दैनंदिनी, दैनिकी अथवा रोजनिशी पूरे अधिकार के साथ कहते हैं परंतु इसे आजकल डायरी कहने पर विवश हैं । डायरी का मतलब है जिसमें तारीखवार हिसाब-किताब, लेन-देन के ब्योरे आदि दर्ज किए जाते हैं। डायरी का यह अत्यंत सामान्य और साधारण परिचय है । आम जनता को डायरी के विशिष्ट स्वरूप की दूर-दूर तक जानकारी नहीं है ।

हिंदी गद्य साहित्य के विकास; उन्नति एवं उत्कर्ष में दैनंदिनी का योगदान अतुल्य है । यह विडंबना ही है कि उसकी अब तक हिंदी में उपेक्षा ही होती आई है । कोई इसे पिछड़ी विधा तो कोई इसे अद्‌र्ध साहित्यिक विधा मानता है । एक विद्‌वान तो यहाँ तक कहते हैं कि डायरी कुलीन विधा नहीं है । साहित्य और उसकी विधाओं के संदर्भ में कुलीन-अकुलीन का भेद करना साहित्यिक गरिमा के अनुकूल नहीं है । सभी विधाएँ अपनी-अपनी जगह पर अत्यधिक प्रमाण में मनुष्य के भावजगत, विचारजगत और अनुभूतिजगत का प्रतिनिधित्व करती हैं । वस्तुतः मनुष्य का जीवन ही एक सुंदर किताब की तरह है और यदि इस जीवन का अंकन मनुष्य जस का तस किताब रूप में करता जाए तो इसे किसी भी मानवीय दृष्टिकोण से श्लाघ्यनीय माना जा सकता है ।

डायरी में मनुष्य अपने अंतर्जीवन एवं बाह्‌यजीवन की लगभग सभी स्थितियों को यथास्थिति अंकित करता है । जीवन के अंतर्द्‌वंद्‌व, वर्जनाओं, पीड़ाओं, यातनाओं, दीर्घ अवसाद के क्षणों एवं अनेक विरोधाभासों के बीच संघर्ष में अपने आपको स्वस्थ, मुक्त एवं प्रसन्न रखने की प्रक्रिया है डायरी । इसलिए अपने स्वरूप में डायरी प्रकाशन

परिचय

आधुनिक साहित्यकारों में कुबेर कुमावत एक जाना-माना नाम है । आपके विचारात्मक एवं वर्णनात्मक निबंध बहुत प्रसिद्‌ध हैं । आपके निबंध, कहानियाँ विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रहती हैं ।

गद्‌य संबंधी

डायरी : डायरी लेखन व्यक्ति के द्‌वारा लिखा गया व्यक्तिगत अनुभवों, सोच और भावनाओं को लिखित रूप में अंकित कर बनाया गया संग्रह है । डायरी रोज लिखा गया लेखन है । इसमें प्रतिदिन उठ रही भावनाओं को प्रायः तुरंत उसी वक्त लिख लिया जाता है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने 'डायरी' विधा के लेखन की प्रक्रिया, महत्व आदि को स्पष्ट किया है ।

योजना का भाग नहीं होती और न ही लेखकीय महत्त्वाकांक्षा का रूप होती है । साहित्य की अन्य विधाओं के पीछे उनका प्रकाशन और तत्पश्चात प्रतिष्ठा प्राप्त करने की मंशा होती है । वे एक कृत्रिम आवेश में लिखी जाती हैं और सावधानीपूर्वक लिखी जाती हैं । साहित्य की लगभग सभी विधाओं के सृजनकर्म के पीछे उसे प्रकाशित करने का उद्‌देश्य मूल होता है । डायरी में यह बात नहीं है । हिंदी में आज लगभग एक सौ पचास के आसपास डायरियाँ प्रकाशित हैं और इनमें से अधिकांश डायरीकारों के देहांत के पश्चात प्रकाश में आई हैं । कुछ तो अपने अंकित कालानुक्रम के सौ वर्ष बाद प्रकाशित हुई हैं ।

डायरी के लिए विषयवस्तु का कोई बंधन नहीं है । मनुष्य की अनुभूति एवं अनुभव जगत से संबंधित छोटी से छोटी एवं तुच्छ बात, प्रसंग, विचार या दृश्य आदि उसकी विषयवस्तु बन सकते हैं और यह डायरी में तभी आ सकता है जब डायरीकार का अपने जीवन एवं परिवेश के प्रति दृष्टिकोण उदार एवं तटस्थ हो तथा अपने आपको व्यक्त करने की भावना बेलाग, निष्कपट, एवं सच्ची हो । डायरी साहित्य की सबसे अधिक स्वाभाविक, सरल एवं आत्मप्रकटीकरण की सादगी से युक्त विधा है । यह अभिव्यक्ति की प्रक्रिया से गुजरती धीरे-धीरे और क्रमशः अग्रसारित होने वाली विधा है । डायरी में जो जीवन है वह सावधानीपूर्वक रचा हुआ जीवन नहीं है । डायरी में वह कसाव नहीं होता जो अन्य विधाओं में देखा जा सकता है । डायरी से पारदर्शक व्यक्तित्व की पहचान होती है जिसमें सब कुछ निःसंकोच उभरकर आता है ।

डायरी विधा के रूप संस्थान का मूल आधार उसकी दैनिक कालानुक्रम योजना है । अंग्रेजी में 'क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर' कहा जाता है । इसके अभाव में डायरी का कोई रूप नहीं है परंतु यह फर्जी भी हो सकता है । हिंदी में कुछ उपन्यास, कहानियाँ और नाटक इसी फर्जी कालानुरूप में लिखे गए हैं, यहाँ केवल डायरी शैली का उपयोग मात्र हुआ है । दैनंदिन जीवन के अनेक प्रसंग, भाव, भावनाएँ, विचार आदि डायरीकार इसी कालानुक्रम में अंकित करता है, परंतु इसके पीछे डायरीकार की निष्कपट स्वीकारोक्तियों का स्थान सर्वाधिक है । बाजारों में जो कापियाँ मिलती हैं उनमें छिपा हुआ कालानुक्रम है । इसमें हम अपने दैनंदिन जीवन के अनेक व्यावहारिक ब्योरों को दर्ज करते हैं परंतु यह विवेच्य डायरी नहीं है । बाजारों में मिलने वाली डायरियों के मूल में एक कैलेंडर वर्ष छपा हुआ है। यह कैलेंडरनुमा डायरी शुष्क, नीरस एवं व्यावहारिक प्रबंधनवाली डायरी है जिसका मनुष्य के जीवन एवं भावजगत से दूर-दूर तक संबंध नहीं होता।

हिंदी में अनेक डायरियाँ ऐसी हैं जो प्रायः यथावत अवस्था में प्रकाशित हुई हैं । इनमें आप एक बड़ी सीमा तक डायरीकार के व्यक्तित्व को निष्कपट,पारदर्शक रूप में देख सकते हैं । डायरी को बेलाग

श्रवणीय

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की जीवनी में से कोई प्रेरणादायी घटना पढ़िए और सुनाइए ।

लेखनीय

किसी पठित गद्‌य/पद्‌य के आशय को स्पष्ट करने के लिए पी.पी.टी (P.P.T.) के मुद्‌दे बनाइए ।

आसपास

अंतरजाल से कोई अनूदित कहानी ढूँढ़कर रसास्वादन करते हुए वाचन कीजिए ।

आत्मप्रकाशन की विधा बनाने में महात्मा गांधी का योगदान सर्वोपरि है । उन्होंने अपने अनुयायियों एवं कार्यकर्ताओं को अपने जीवन को नैतिक दिशा देने के साधन रूप में नियमित दैनंदिन लिखने का सुझाव दिया तथा इसे एक व्रत के रूप में निभाने को कहा । उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को आंतरिक अनुशासन एवं आत्मशुद्धि हेतु डायरी लिखने की प्रेरणा दी । गुजराती में लिखी गई बहुत सी डायरियाँ आज हिंदी में अनुवादित हैं । इनमें मनु बहन गांधी, महादेव देसाई, सीताराम सेकसरिया, सुशीला नैयर, जमनालाल बजाज, घनश्याम बिड़ला, श्रीराम शर्मा, हीरालाल जी शास्त्री आदि उल्लेखनीय हैं ।

निष्कपट आत्मस्वीकृतियुक्त प्रविष्टियों की दृष्टि से हिंदी में आज अनेक डायरियाँ प्रकाशित हैं जिनमें अंतरंग जीवन के अनेक दृश्यों एवं स्थितियों की प्रस्तुति है । इनमें डॉ. धीरेंद्र वर्मा, शिवपूजन सहाय, नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, गणेश शंकर विद्‌यार्थी, रामेश्वर टांटिया, रामधारी सिंह 'दिनकर', मोहन राकेश, मलयज, मीना कुमारी, बालकवि बैरागी आदि की डायरियाँ उल्लेखनीय हैं । कुछ निष्कपट प्रविष्टियाँ काफी मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हैं । मीना कुमारी अपनी डायरी में एक जगह लिखती हैं – ''जिंदगी के उतार-चढ़ाव यहाँ तक ले आए कि कहानी लिखूँ । यह कहानी, जो कहानी नहीं है, मेरा अपना आप है । आज जब... उसने मुझे छोड़ दिया तो जी चाह रहा है, सब उगल दूँ ।'' मलयज अपनी डायरी में २९ दिसंबर, ५९ को लिखते हैं–''शायद सब कुछ मैंने भावना के सत्य में ही पाया है । कुछ नहीं होता, मैं ही सब कल्पित कर लिया करता हूँ । संकेत मिलते हैं, पूरा चित्र खड़ा कर लेता हूँ ।'' डॉ. धीरेंद्र वर्मा अपनी डायरी में १९/११/१९२१ के दिन लिखते हैं–''राष्ट्रीय आंदोलन में भाग न लेने के कारण मेरे हृदय में कभी-कभी भारी संग्राम होने लगता है । जब हम पढ़े-लिखे व समझदार लोगों ने ही कायरता दिखाई है तब औरों से क्या आशा की जा सकती है । सच तो यह है कि भले घरों के पढ़े-लिखे लोगों ने बहुत ही कायरता दिखाई हैं ।''

अपने जीवन की सच्ची, निष्काय, पारदर्शी छवि को रखने में डायरी साहित्य का उत्कृष्ट माध्यम है । डायरी जीवन का अंतर्दर्शन है । अंतरंगता के अभाव में डायरी, डायरीकार की निजी भावनाओं, विचारों एवं प्रतिक्रियाओं के द्‌वारा अंकित उसके अपने जीवन एवं परिवेश का दस्तावेज है । एक अच्छी, सच्ची एवं सादगीयुक्त डायरी के लिए डायरीकार का सच्चा, साहसी एवं ईमानदार होना आवश्यक है । डायरी अपनी रचना प्रक्रिया में मनुष्य के जीवन में जहाँ आंतरिक अनुशासन बनाए रखती है, वहीं मनौवैज्ञानिक संतुलन बनाने का भी कार्य करती है ।

मौलिक सृजन

'डायरी लेखन में व्यक्ति का व्यक्तित्व झलकता है' इस विधान की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

पुस्तकालय से राहुल सांस्कृत्यायन की डायरी के कुछ पन्ने पढ़कर उस पर चर्चा कीजिए ।

पाठ से आगे

हिंदी में अनुवादित उल्लेखनीय डायरी लेखकों के नामों की सूची तैयार कीजिए ।

शब्द संसार

निष्कपट (वि.) = छलहित, सीधा
मनोवैज्ञानिक (भा.सं.) = मन में उठनेवाले विचारों का विवचन करने वाला
संतुलन (पुं.सं) = दो पक्षों का बल बराबर रखना
कायरता (भाव.सं.) = भीरुता, डरपोकपन
दैनंदिनी (स्त्री.सं.) = दैनिकी
गरिमा (वि.) = प्रशंसनीय
वर्जना (क्रि.) = रोक लगाना
मंशा (स्त्री.अ.) = इच्छा
बेलाग (वि.) = बिना आधार का
फर्जी (वि.फा.) = नकली
कसाव (पुं.) = कसने की स्थिति
विवेच्य (वि.) = जिसकी विवेचना की जाती है ।
सर्वोपरि (वि.) = सबसे ऊपर

मुहावरा

दूर-दूर तक संबंध न होना = कुछ भी संबंध न होना

पाठ के आँगन में

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :-

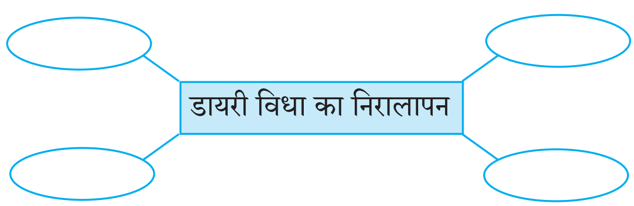

(२) उत्तर लिखिए :-

'क्रोनॉलॉजिकल' ऑर्डर इसे कहा जाता है -

(३) (क) अर्थ लिखिए :-

अवसाद - ______

दस्तावेज- ______

(ख) लिंग परिवर्तन कीजिए :-

लेखक - ______

विद्‌वान - ______

भाषा बिंदु

निम्न वाक्यों में से कारक पहचानकर तालिका में लिखिए :-

कारक चिह्न

(१) किसी ने आज तक तेरे जीवन की कहानी नहीं लिखी ।
(२) मेरी माता का नाम इति और पिता का नाम आदि है ।
(३) वे सदा स्वाधीनता से विचरते आए हैं ।
(४) अवसर हाथ से निकल जाता है ।
(५) अरे भाई ! मैं जाने के लिए तैयार हूँ ।
(६) अपने समाज में यह सबका प्यारा बनेगा ।
(७) उन्होंने पुस्तक को ध्यान से देखा ।
(८) वक्ता महाशय वक्तृत्व देने को उठ खड़े हुए ।

चिह्न	नाम

रचना बोध

....
....
....

५. उम्मीद

– कमलेश भट्ट 'कमल'

संभाषणीय

विद्‌यालय के काव्य पाठ में सहभागी होकर अपनी पसंद की कोई कविता प्रस्तुत कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● काव्य पाठ का आयोजन करवाएँ । ● विद्‌यार्थियों को उनकी पसंद की कोई कविता चुनने के लिए कहें । वही कविता चुनने के कारण पूछें । ● कविता प्रस्तुति की तैयारी करवाएँ । ● सभी विद्‌यार्थियों को सहभागी कराएँ ।

वो खुद ही जान जाते हैं बुलंदी आसमानों की
परिंदों को नहीं तालीम दी जाती उड़ानों की

जो दिल में हौसला हो तो कोई मंजिल नहीं मुश्किल
बहुत कमजोर दिल ही बात करते हैं थकानों की

जिन्हें है सिर्फ मरना ही, वो बेशक खुदकुशी कर लें
कमी कोई नहीं वर्ना है जीने के बहानों की

महकना और महकाना है केवल काम खुशबू का
कभी खुशबू नहीं मोहताज होती कद्रदानों की

हमें हर हाल में तूफान से महफूज रखती हैं
छतें मजबूत होती हैं उम्मीदों के मकानों की

× × × ×

परिचय

जन्म : १३ फरवरी १९५९ जफरपुर, (उ.प्र)

परिचय : कमलेश भट्ट 'कमल' गजल, कहानी, हायकू, साक्षात्कार, निबंध, समीक्षा आदि विधाओं में रचना करते हैं । वे पर्यावरण के प्रति गहरा लगाव रखते हैं । नदी, पानी सब कुछ उनकी रचनाओं के विषय हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : नखलिस्तान, मंगल टीका (कहानी संग्रह) मैं नदी की सोचता हूँ, शंख, सीप, रेत, पानी (गजलसंग्रह), अमलतास (हायकू संकलन) अजब–गजब (बाल कविताएँ) तुईम (बाल उपन्यास) ।

पद्‌य संबंधी

गजल : यह एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए 'शेरों' का समूह है । गजल के पहले शेर को 'मतला' और अंतिम शेर को 'मकता' कहते हैं । प्रत्येक शेर एक–दूसरे से स्वतंत्र होते हैं ।

प्रस्तुत गजलों में गजलकार ने अपनी मंजिल की तरफ बुलंदी से बढ़ने, जिजीविषा बनाए रखने, अपने पर भरोसा करने, सच्चाई पर डटे रहने आदि के लिए प्रेरित किया है ।

कोई पक्का इरादा क्यों नहीं है
तुझे खुद पर भरोसा क्यों नहीं है ?

बने हैं पाँव चलने के लिए ही
तू उन पाँवों से चलता क्यों नहीं है ?

बहुत संतुष्ट है हालात से क्यों
तेरे भीतर भी गुस्सा क्यों नहीं है ?

तू झूठों की तरफदारी में शामिल
तुझे होना था सच्चा, क्यों नहीं है ?

मिली है खुदकुशी से किसको जन्नत
तू इतना भी समझता क्यों नहीं है ?

सभी का अपना है यह मुल्क आखिर
सभी को इसकी चिंता क्यों नहीं है ?

किताबों में बहुत अच्छा लिखा है
लिखे को कोई पढ़ता क्यों नहीं है ?

पठनीय

रवींद्रनाथ टैगोर जी की किसी अनुवादित कविता/कहानी का आशय समझते हुए वाचन कीजिए ।

श्रवणीय

हिंदी-मराठी भाषा के प्रमुख गजलकारों की गजल यू ट्यूब/टीवी/ कवि सम्मेलनों में सुनिए और सुनाइए ।

लेखनीय

आठ से दस पंक्तियों के पठित गद्यांश का अनुवाद एवं लिप्यंतरण कीजिए ।

शब्द संसार

बुलंदी (भा.सं.) = शिखर
परिंदा (पु.सं.) = पक्षी, पंछी
तालीम (स्त्री.अ.) = शिक्षा
हौसला (पु.अ.) = साहस
मोहताज (वि.) = वंचित
कद्रदान (वि.फा.) = प्रशंसक, गुणग्राहक
महफूज (वि.) = सुरक्षित
इरादा (पुं.अ.) = फैसला, विचार
हालात (अ.) = परिस्थिति
तरफदारी (भा.सं.) = पक्ष लेना
जन्नत (स्त्री.सं.) = स्वर्ग
मुल्क (पु.अ.) = देश, वतन

आसपास

किसी काव्य संग्रह से कोई कविता पढ़कर उसका आशय निम्न मुद्दों के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

- कवि का नाम
- कविता का विषय
- केंद्रीय भाव

पाठ के आँगन में

(१) उत्तर लिखिए :

कविता से मिलने वाली प्रेरणा :-

(क) ....

(ख) ....

(२) 'किताबों में बहुत अच्छा लिखा है, लिखे को कोई पढ़ता क्यों नहीं' इन पंक्तियों द्‌वारा कवि संदेश देना चाहते हैं .....

(३) कविता में आए अर्थ पूर्ण शब्द अक्षर सारणी से खोजकर तैयार कीजिए:-

दि	को	म	ह	फू	ज	का	ह
हीं	द्र	ह	र्फ	म	र	ता	न
भी	ब	फ	म	जो	र	ली	अ
दा	हा	ना	ले	थ	जी	म	वू
बु	की	मु	त	बा	मो	मी	हों
मं	लं	श	श्कि	ह	ई	स	हूँ
जि	दा	दी	ता	ल	ला	द	न
ल	री	ज	ला	त	खु	श	नू

कल्पना पल्लवन

'मैं चिड़िया बोल रही हूँ' विषय पर स्वयंस्फूर्त लेखन कीजिए ।

पाठ से आगे

भाषा के हिंदी गजलकारों के नाम तथा उनकी प्रसिद्‌ध गजलों की सूची बनाइए ।

भाषा बिंदु

अर्थ की दृष्टि से वाक्य परिवर्तित करके लिखिए :-

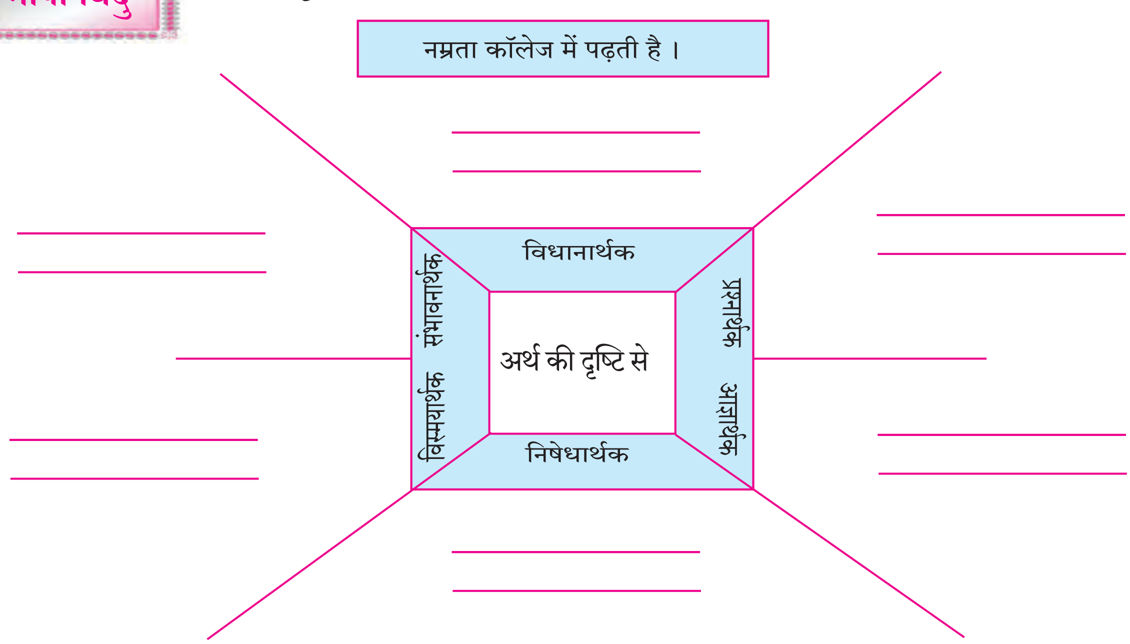

रचना बोध

....

....

....

६. सागर और मेघ

– राय कृष्णदास

मौखिक

समुद्र से प्राप्त होने वाली संपदाओं के नाम एवं उनके व्यावहारिक उपयोगों की जानकारी बताइए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारत की तीनों दिशाओं में फैले हुए समुद्रों के नाम पूछें । ● समुद्र से प्राप्त होने वाली संपत्तियों के नाम तथा उपयोग बताने के लिए कहें । ● इन संपत्तियों पर आधारित उद्‌योगों के नामों की सूची बनवाएँ ।

सागर – मेरे हृदय में मोती भरे हैं ।

मेघ – हाँ, वे ही मोती जिनके कारण हैं–मेरी बूँदें ।

सागर – हाँ, हाँ, वही वारि जो मुझसे हरण किया जाता है । चोरी का गर्व !

मेघ – हाँ, हाँ वही जिसको मुझसे पाकर बरसात की उमड़ी नदियाँ तुम्हें भरती हैं ।

सागर – बहुत ठीक । क्या आठ महीने नदियाँ मुझे कर नहीं देंगी ?

मेघ – **(मुसकराया)** अच्छी याद दिलाई । मेरा बहुत–सा दान वे पृथ्वी के पास धरोहर रख छोड़ती हैं, उसी से कर देने की निरंतरता कायम रहती है ।

सागर – वाष्पमय शरीर ! क्या बढ़–बढ़कर बातें करता है अंत को तुझे नीचे गिरकर मिट्‌टी में मिलना पड़ेगा ।

मेघ – खार की खान ! संसार भर के दुष्ट ! पृथ्वी के विकार तुझे मैं शुद्‌ध और मिष्ट बनाकर उच्चतम स्थान देता हूँ । फिर तुझे अमृतवारि धारा से तृप्त और शीतल करता हूँ । उसी का यह फल है ।

सागर – हाँ, हाँ, दूसरे की करतूत पर गर्व । सूर्य का यश अपने पल्ले ।

मेघ – **(अट्‌टहास करता है)** क्यों मैं चार महीने सूर्य को विश्राम जो देता हूँ । वह उसी के विनियम में यह करता है । उसका यह कर्म मेरी संपत्ति है । वह तो बदले में केवल विश्राम का भागी है ।

सागर – और मैं जो उसे रोज विश्राम देता हूँ ।

मेघ – उसके बदले तो वह तेरा जल शोषण करता है ।

सागर – चाहे कुछ भी हो जाए, मैं निज व्रत नहीं छोड़ता मैं सदैव अपना कर्म करता हूँ और अन्यों से करवाता भी हूँ ।

मेघ – **(इठलाकर)** धन्य रे व्रती, मानो श्रद्‌धापूर्वक तू सूर्य को वह दान देता है । क्या तेरा जल वह हठात नहीं हरता ?

सागर – **(गंभीरता से)** और वाड़व जो मुझे नित्य जलाया करता है, तो भी मैं उसे छाती से लगाए रहता हूँ । तनिक उसपर तो ध्यान दो ।

मेघ – **(मुसकरा दिया)** हाँ, उसमें तेरा और कुछ नहीं, शुद्‌ध स्वार्थ है । क्योंकि वह तुझे जो जलाता न रहे तो तेरी मर्यादा न रह जाए ।

सागर – **(गरजकर)** तो उसमें मेरी क्या हानि ! हाँ, प्रलय अवश्य हो जाए ।

परिचय

जन्म : १३ नवंबर १८८२ वाराणसी (उ.प्र.) । **मृत्यु :** १९८५

परिचय: राय कृष्णदास हिंदी अंग्रेजी संस्कृत और बांग्लाभाषा के जानकार थे । आपने कविता, निबंध गद्‌यगीत, कहानी, कला, इतिहास आदि विषयों पर रचना की है ।

प्रमुख कृतियाँ : भारत की चित्रकला, भारत की मूर्तिकला (मौलिक ग्रंथ), साधना आनाख्या, सुधांशु (कहानी संग्रह) प्रवाल (गद्‌यगीत) आदि ।

पद्‌य संबंधी

संवाद : दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच वार्तालाप, बातचीत या संभाषण संवाद कहलाता है ।

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखक ने सागर एवं मेघ के गुणों को दर्शाया है । अपने गुणों पर इतराना, अहंकार करना एक बुराई है–यह स्पष्ट करते हुए सभी को विनम्र रहने की शिक्षा प्रदान की है ।

मेघ – **(एक साँस लेकर)** आह ! यह हिंसा वृत्ति और क्या; मर्यादा नाश क्या कोई साधारण बात है ?

सागर – हो, हुआ करे । मेरा आयास तो बढ़ जाएगा ।

मेघ – आह ! उच्छृंखलता की इतनी बड़ाई ?

सागर – अपनी ओर तो देख, जो बादल होकर आकाश भर में इधर से उधर मारा-मारा फिरता है ।

मेघ – धन्य तुम्हारा ज्ञान ! मैं यदि सारे आकाश में घूम फिर के संसार का निरीक्षण न करूँ और जहाँ आवश्यकता हो जीवन-दान न करूँ तो रसा नीरस हो जाए, उर्वरा से वंध्या हो जाए । तू नीचे रहने वाला ऊपर रहने वालों के इस तत्त्व को क्या जाने ।

सागर – यदि तू मेरे लिए ऊपर है तो मैं तेरे लिए ऊपर हूँ क्योंकि हम दोनों का आकाश एक ही है ।

मेघ – हाँ ! निस्संदेह ऐसी दलील वे ही लोग कर सकते हैं जिनके हृदय में कंकड़-पत्थर और शंख-घोंघे भरे हैं ।

सागर – बलिहारी तुम्हारी बुद्धि की, जो रत्नों को कंकड़ पत्थर और मोतियों को सीप-घोंघे समझते हो ।

मेघ – तुम्हारे भीतर रत्न बचे कहाँ हैं ? तुम तो, कंकड़-पत्थर को ही रत्न समझे बैठे हो ।

सागर – और मनुष्य जो इन्हें निकालने के लिए नित्य इतना श्रम करते हैं तथा प्राण खोते हैं ?

मेघ – वे स्पर्धा करने में मरे जाते हैं ।

सागर – अरे, अपनी सीमा में रमने की मौज को अस्थिरता समझने वाले मूर्ख ! तू ढेर-सा हल्ला ही करना जानता है कि-

मेघ – हाँ मैं गरजता हूँ तो बरसता भी हूँ । तू तो...

सागर – यह भी क्यों नहीं कहता कि वज्र भी निपातित करता हूँ ।

मेघ – हाँ, आततायियों को समुचित दंड देने के लिए ।

सागर – कि स्वतंत्रों का पक्ष छेदन करके उन्हें अचल बनाने के लिए ।

मेघ – हाँ, तू संसार को दीन करने वाली उच्छृंखलताओं का पक्ष क्यों न लेगा; तू तो उन्हें छिपाता है न !

सागर – मैं दीनों की शरण अवश्य हूँ !

मेघ – सच है अपराधियों के संगी ! यही दीनों की सहायता है कि संसार के उत्पातियों और अपराधियों को जगह देना और संसार को सदैव भ्रम में डाले रहना ।

सागर – दंड उतना ही होना चाहिए कि दंडित चेत जाए, उसे त्रास हो जाए । अगर वह अपाहिज हो गया तो-

मेघ – हाँ, यह भी कोई नीति है कि आततायी नित्य अपना सिर

मौलिक सृजन

'परिवर्तन सृष्टि का नियम है' इस संदर्भ में अपना मत व्यक्त कीजिए ।

पठनीय

प्राकृतिक परिवेश के अनुसार मानव के रहन-सहन संबंधी जानकारी पढ़कर चर्चा कीजिए ।

श्रवणीय

निम्न मुद्दों के आधार पर जागतिक तापमान वृद्धि संबंधी अपने विचार सुनाइए :-

कारण | समस्याएँ | उपाय

उठाना चाहे और शास्ता उसी की चिंता में नित्य शस्त्र लिए खड़ा रहे, अपने राज्य की कोई उन्नति न करने पावे ।

सागर – भाई अपने क्रोध को शांत करो । क्रोध में बात बिगड़ती है क्योंकि क्रोध हमें विवेकहीन बना देता है ।

मेघ – **(थोड़ा शांत होते हुए)** हाँ, यह बात तो सच है । हम दोनों ने अपने-अपने क्रोध को शांत कर लेना चाहिए ।

सागर – तो आओ हम मिलकर जनकल्याण के विषय में थोड़ा विचार विमर्श कर लें ।

मेघ – हाँ ! मनुष्य हम दोनों पर बहुत निर्भर हैं । प्रतिवर्ष किसान बड़ी आतुरता से मेरी प्रतीक्षा करते हैं ।

सागर – मेरे क्षार से मनुष्य को नमक प्राप्त होता है जिससे उसका भोजन स्वादिष्ट बनता है ।

मेघ – सागर भाई हमें कभी आपस में उलझना नहीं चाहिए ।

सागर – आओ प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अब कभी घमंड में एक दूसरे को अपमानित नहीं करेंगे बल्कि मिलकर जनकल्याण के लिए कार्य करेंगे ।

मेघ – मैं नदियों को भर-भर तुम तक भेजूँगा ।

सागर – मैं सहर्ष उन्हें उपकार सहित ग्रहण करूँगा ।

शब्द संसार

वारि (पुं.सं.) = जल
वाड़व (पुं.सं.) = समुद्र जल के अंदर वाली अग्नि
मर्यादा (स्त्री.सं.) = सीमा
रसा (स्त्री.सं.) = पृथ्वी
निपात (पुं.सं.) = गिरना
आततायी (पु.) = अत्याचारी
समुचित (वि.) = उचित, उपयुक्त
उच्छृंखल (वि.) = उद्‌दंड, उत्पाती
आतुरता (भा.सं.) = उत्सुकता
आयास (पुं.सं.) = प्रयत्न, परिश्रम

लेखनीय

'अगर न नभ में बादल होते' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

आसपास

दूरदर्शन पर प्रतिदिन दिखाए जाने वाली तापमान संबंधी जानकारी देखिए । संपूर्ण सप्ताह में तापमान में किस तरह का बदलाव पाया गया, इसकी तुलना करके टिप्पणी तैयार कीजिए ।

पाठ से आगे

मोती कैसा तैयार होता है इसपर चर्चा कीजिए और दैनिक जीवन में मोती का उपयोग कहाँ कहाँ होता हैं ।

पाठ के आँगन में

(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :-

(अ)	(आ)
दूसरे की करतूत पर गर्व करने वाला	मनुष्य
सागर को नित्य जलाने वाला	सागर
झूठी स्पर्धा करने में मरने वाला	वाड़व
	मेघ

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :-

मेघ इनके भेद जानते हैं

(३) स्वमत लिखिए :-

अगर सागर न होता तो ....

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में से सर्वनाम एवं क्रिया छाँटकर भेदों सहित लिखिए :-

सर्वनाम

चाहे कुछ भी हो जाए, मैं निज व्रत नहीं छोड़ता मैं सदैव--अपना कर्म करता हूँ और अन्यों से करवाता भी हूँ।

क्रिया

(२) निम्न में से संज्ञा तथा विशेषण पहचानकर भेदों सहित लिखिए :-

संज्ञा

मोहन ने फलों की टोकरी में कुछ रसीले आम, थोड़े से बेर तथा कुछ अंगूर के गुच्छे साफ पानी से धोकर रखवा दिए।

विशेषण

रचना बोध

....

....

....

७.लघुकथाएँ

(पठनार्थ)

– *ज्योति जैन*

दावा

बहस चल रही थी । सभी अपने-अपने देशभक्त होने का दावा पेश कर रहे थे ।

शिक्षक का कहना था, ''हम नौनिहालों को शिक्षित करते हैं, अतः यही देश की बड़ी सेवा है ।''

चिकित्सक का कहना था, ''नहीं ! हम ही देशवासियों की जान बचाते हैं, अतः यह प्रमाणपत्र तो हमें ही मिलना चाहिए ।''

बड़े-बड़े कंस्ट्रक्शन करने वाले इंजीनियरों ने भी अपना दावा जताया, तो बिजनेसमैन, किसानों ने भी देश की आर्थिक उन्नति में अपना योगदान बताते हुए स्वयं का पक्ष प्रस्तुत किया ।

तब खादीधारी नेता आगे आए, ''हमारे बिना देश का विकास संभव है क्या ? सबसे बड़े देशभक्त तो हम ही हैं ।''

यह सुन सब धीरे-धीरे खिसकने लगे ।

तभी आवाज आई, ''अरे लालसिंह ! तुम अपनी बात नहीं रखोगे ?''

''मैं तो क्या कहूँ ?'' रिटायर्ड फौजी बोला, ''किस बिना पर कुछ कहूँ ! मेरे पास तो कुछ नहीं, तीनों बेटे पहले ही फौज में शहीद हो गए हैं ।''

× × × ×

परिचय

जन्म : २७ अगस्त १९६४ मंदसौर (म.प्र.)। **परिचय :** मुख्यतः कथा साहित्य एवं समीक्षा के क्षेत्र में लेखन किया है । प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : जल तरंग (लघुकथा संग्रह) भोरवेला (कहानी संग्रह)

गद्य संबंधी

लघुकथा : लघुकथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण/प्रसंग को प्रस्तुत करने का चातुर्य है ।

प्रस्तुत 'दावा' लघुकथा में जैन जी ने प्रच्छन्न रूप से सैनिकों के योगदान को देश के लिए सर्वोपरि बताया है । 'नीम का पेड़' लघुकथा में पर्यावरण के साथ-साथ बड़ों की भावनाओं का आदर करना चाहिए, यह बताया है ।

संभाषणीय

'पर्यावरण संवर्धन' संबंधी कोई पथनाट्य प्रस्तुत कीजिए ।

नीम का पेड़

बाउंड्रीवाल में बाधक बन रहा नीम का पेड़ घर में सबको खटक रहा था । आखिर कटवाने का ही फैसला लिया गया । काका साब उदास हो चले । राजेश समझा रहा था, '' कार रखने में दिक्कत आएगी, पेड़ तो कटवाना ही पड़ेगा न !''

काका साब ने हथियार डालने के स्वर में 'ठीक है' कहकर चुप्पी साध ली । हमेशा अपना रोब जताने वाले काका साब की चुप्पी राजेश को कुछ खल रही थी । अपने पिता के चेहरे को देखते-देखते अचानक ही राजेश को उसमें नीम तने की लकीरें नजर आने लगीं ।

''हैप्पी फादर्स डे पापा...'' सात साल के प्रतीक की आवाज ने उसके विचारों को विराम दिया ।

''पापा, आज फादर्स डे है और मैं आपके लिए ये ....गिफ्ट लाया हूँ ।'' कहते-कहते प्रतीक ने अपने हाथों में थैली में लाया पौधा आगे कर दिया ।

''पापा, इसे वहाँ लगाएँगे जहाँ इसे कोई काटे नहीं ।''

''हाँ बेटा, इसे भी लगाएँगे और बाहरवाला नीम भी नहीं कटेगा । गैरेज के लिए कुछ और व्यवस्था देखते हैं ।'' फैसले-वाले अंदाज में कहते हुए राजेश ने कनखियों से काका को देखा।

बाहर सर्र... से हवा चली और बूढ़ा नीम मानो नए जोश से झूमकर लहरा उठा ।

लेखनीय

'राष्ट्रीय रक्षा अकादमी' की जानकारी प्राप्त करके लिखिए ।

श्रवणीय

प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित कोई कविता सुनिए और सुनाइए ।

शब्द संसार

नौनिहाल (पुं.सं.) = होनहार बच्चे
चिकित्सक (पुं.सं.) = चिकित्सा करने वालावैद्य
योगदान (पुं.सं.) = किसी काम में साथ देना

मुहावरे

पेश करना = प्रस्तुत करना
दावा जताना = अधिकार जताना

पठनीय

वृंदावनलाल वर्मा के किसी उपन्यास का एक अंश पढ़कर सुनाइए ।

रचना बोध

....
....
....

८. झंडा ऊँचा सदा रहेगा

– रामदयाल पांडेय

आसपास

अपने जिले में सामाजिक कार्य करने वाली किसी संस्था का परिचय निम्न मुद्‌दों के आधार पर प्राप्त करके टिप्पणी बनाइए । :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से जिले की समाज में काम करने वाली संस्थाओं की सूची बनवाएँ । ● किसी एक संस्था की जानकारी मुद्‌दों के आधार पर एकत्रित करने के लिए कहें । ● कक्षा में चर्चा करें ।

ऊँचा सदा रहेगा, ऊँचा सदा रहेगा ।
हिंद देश का प्यारा झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

तूफानों से और बादलों से भी नहीं झुकेगा,
नहीं झुकेगा, नहीं झुकेगा झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

केसरिया बल भरने वाला, सादा है सच्चाई,
हरा रंग है हरी हमारी, धरती की अंगड़ाई ।
और चक्र कहता कि हमारा, कदम कभी न रुकेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

शान हमारी ये झंडा है, ये अरमान हमारा,
ये बल पौरुष है सदियों का, ये बलिदान हमारा ।
जीवन–दीप बनेगा, ये अंधियारा दूर करेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

आसमान में लहराए ये, बादल में लहराए,
जहाँ–जहाँ जाए ये झंडा, ये (बात, संदेश, संवाद) सुनाए ।
है आज हिंद, ये दुनिया को आजाद करेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

परिचय

जन्म : १९१५ बिहार **मृत्यु :** २००२
परिचय : रामदयाल पांडेय जी स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रभाव के महान कवि थे । साहित्य को जीने वाले अपने धुन के पक्के, आदर्श कवि और विद्‌वान संपादक के रूप में प्रसिद्‌ध रामदयाल जी अनेक साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े रहें ।

पद्‌य संबंधी

प्रेरणागीत : प्रेरणागीत वे गीत होते हैं जो हमारे दिलों में उतरकर हमारी जिंदगी को जूझने की शक्ति और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने देश के झंडे का गौरवगान विभिन्न स्वरूपों में किया है ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/xPsg3GkKHb0

श्रवणीय

देशभक्ति परक हिंदी गीतों को सुनिए ।

नहीं चाहते हम दुनिया को, अपना दास बनाना,
नहीं चाहते औरों के मुँह की (बात, रोटी, फटकार) खा जाना ।
सत्य-न्याय के लिए हमारा लहू सदा बहेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

हम कितने सुख सपने लेकर, इसको (ठहराते, फहराते, लहराते) हैं ।
इस झंडे पर मर मिटने की, कसम सभी खाते हैं ।
हिंद देश का है ये झंडा, घर-घर में लहरेगा ।
झंडा ऊँचा सदा रहेगा ।।

संभाषणीय

क्रांतिकारियों के जीवन से संबंधित कोई प्रेरणादायी प्रसंग/घटना पर आधारित संवाद बनाकर प्रस्तुत कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'मेरे सपनों का भारत' इस कल्पना का विस्तार अपने शब्दों में कीजिए ।

शब्द संसार

अरमान(पुं.तु) = लालसा, चाह
पौरुष (पुं.सं) = पुरुषार्थ, पराक्रम, साहस
दास (पुं.सं) = सेवक, गुलाब
लोहू (पुं.सं) = लहू, रक्त

लेखनीय

राष्ट्र का गौरव बनाए रखने के लिए पूर्व प्रधानमंत्रियों द्‌वारा किए सराहनीय कार्यों की सूची बनाइए ।

नौवीं कक्षा पाठ-२ इतिहास और राजनीति शास्त्र

पाठ के आँगन में

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

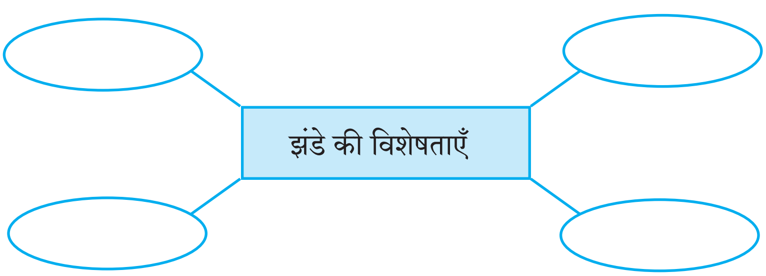

(२) 'स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं', इस विधान पर स्वमत दीजिए ।

पठनीय

किसी ऐतिहासिक नाटक का अंश पढ़िए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) विरामचिह्न पढ़ो, समझो :–

विरामचिह्न

स्थान सूचक (...)

यह चिह्न सूचियों में खाली स्थान भरने के काम आता है।
जैसे (१) लेख– कविता... (२) बाबू मैथिलीशरण गुप्त ...

अपूर्ण सूचक (XXX)

किसी लेख में से जब कोई अंश छोड़ दिया जाता है; तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – तुम समझते हो कि यह बालक है ।
XXX
गाँव के बाजार में वह सब्जी बेचा करता था ।

विरामचिह्न

संकेत सूचक (.)

किसी संज्ञा को संक्षेप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – डॉ. (डाक्टर)
कृ.पी.दे. – कृपया पीछे देखिए ।

बहुधा लेख अथवा पुस्तक के अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – इस तरह राजा और रानी सुख से रहने लगे ।
(–0–)

समाप्ति सूचक(–0–)

(२) नीचे दिए गए चिह्नों के सामने उनके नाम लिखकर इनका उपयोग करते हुए वाक्य बनाइए :–

चिह्न	नाम	वाक्य
–		
.		
___		
[ ]		
“ ”		
....		
,		
!		
;		
( )		
।		
XXX		
–0–		
{ }		
...		

रचना विभाग

- पत्रलेखन (व्यावसायिक/कार्यालयीन)
- निबंध
- कहानी लेखन
- गद्‍य आकलन

पत्रलेखन

कार्यालयीन पत्र

कार्यालयीन पत्राचार के विविध क्षेत्र :-

✼ बैंक, डाकविभाग, विद्‍युत विभाग, दूरसंचार, दूरदर्शन आदि से संबंधित पत्र
✼ महानगर निगम के अन्यान्य / विभिन्न विभागों में भेजे जाने वाले पत्र
✼ माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल से संबंधित पत्र
✼ अभिनंदन/प्रशंसा (किसी अच्छे कार्य से प्रभावित होकर) पत्र लेखन करना ।
✼ सरकारी संस्था द्‍वारा प्राप्त देयक (बिल आदि) से संबंधित शिकायती पत्र

व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक पत्राचार के विविध क्षेत्र :-

✼ किसी वस्तु/सामग्री/ पुस्तकें आदि की माँग करना ।
✼ शिकायती पत्र - दोषपूर्ण सामग्री/ चीजें/ पुस्तकें/ पत्रिका आदि प्राप्त होने के कारण पत्रलेखन
✼ आरक्षण करने हेतु (यात्रा के लिए) ।
✼ आवेदन पत्र - प्रवेश, नौकरी आदि के लिए ।

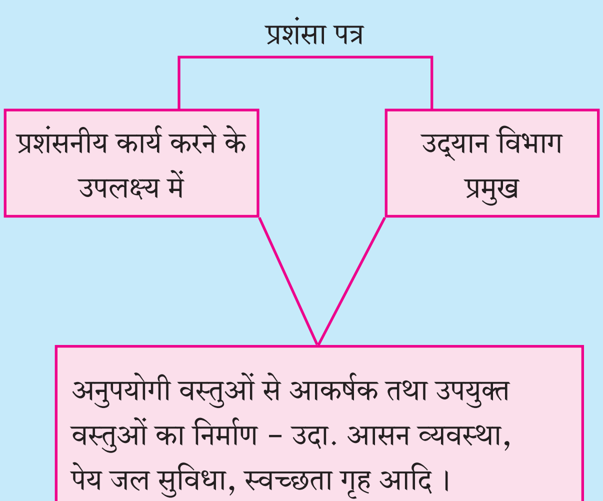

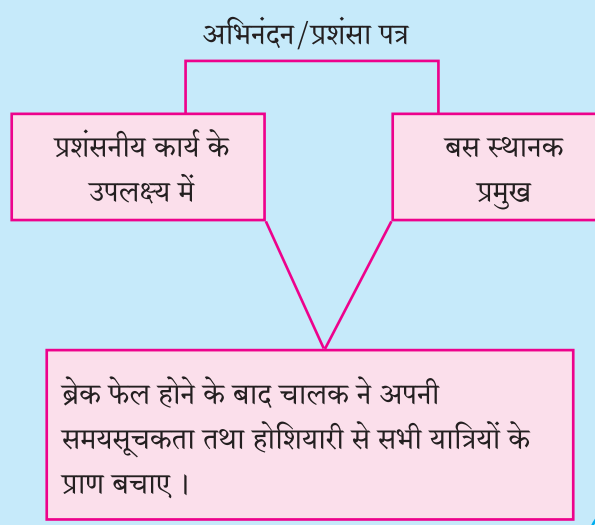

निबंध

निबंध के प्रकार

वैचारिक	वर्णनात्मक	कल्पनाप्रधान	चरित्रात्मक	आत्मकथात्मक
(१)सेल्फी सही या गलत	(१) विज्ञान प्रदर्शनी	(१) यदि श्यामपट बोलने लगे	(१) मेरा प्रिय रचनाकार	(१) भूमिपुत्र की आत्मकथा
(२) मैं और डिजिटल दुनिया	(२) नदी किनारे एक शाम	(२) यदि किताबें न होतीं	(२) मेरा प्रिय खिलाड़ी	(२) मैं हूँ भाषा

कहानी

कहानी लेखन

* मुद्‌दों के आधार पर कहानी लेखन करना ।
* शब्दों के आधार पर कहानी लेखन करना ।
* किसी सुवचन पर आधारित कहानी लेखन करना ।

निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उसे उचित शीर्षक देकर उससे प्राप्त होने वाली सीख भी लिखिए :

(१) एक लड़की ———— विद्‌यालय में देरी से पहुँचना ———— शिक्षक द्‌वारा डाँटना ———— लड़की का मौन रहना ———— दूसरे दिन समाचार पढ़ना ———— लड़की को गौरवान्वित करना ।

(२) एक लड़का ———— रोज निश्चित समय पर घर से निकलना – वृद्‌धाश्रम में जाना ———— माँ का परेशान होना———— सच्चाई का पता चलना ———— गर्व महसूस होना ।

शब्दों के आधार पर.........

(१) मोबाइल, लड़का, गाँव, सफर
(२) रोबोट (यंत्रमानव), गुफा, झोंपड़ी, समंदर

सुवचन पर आधारित कहानी लेखन करना

* वसुधैव कुटुंबकम्
* पेड़ लगाओ, पृथ्वी बचाओ
* जल ही जीवन है
* पढ़ेगी बेटी तो सुखी होगा परिवार
* अनुभव महान गुरु है
* अतिथि देवो भव
* हमारी पहचान; हमारा राष्ट्र
* श्रम ही देवता है
* राखौ मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध
* करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

गद्य आकलन

गद्य – आकलन– (५० से ७० शब्द)

(१) निम्नलिखित गद्यखंड पर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों ।

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है । वह चाहे तो आकाश के तारों को तोड़ ले, वह चाहे तो पृथ्वी के वक्षस्थल को तोड़कर पाताल लोक में प्रवेश कर जाए, वह चाहे तो प्रकृति को खाक बनाकर उड़ा दे । उसका भविष्य उसकी मुट्ठी में है । प्रयत्न के द्वारा वह क्या नहीं कर सकता है ? यह समस्त बातें हम अतीत काल से सुनते चले आ रहे हैं और इन्हीं बातों को सोचकर कर्मरत होते है परंतु अचानक ही मन में यह विचार आ जाता है कि क्या हम जो कुछ करते है वह हमारे वश की बात नहीं है ?

(२) जैसे :-

(१) अपने भाग्य का निर्माता कौन होता है ?

(२) मनुष्य का भविष्य कहाँ बंद है ?

(३) मनुष्य के कर्मरत होने का कारण कौन-सा है ?

(४) इस गद्यखंड के लिए उचित शीर्षक क्या हो सकता है ?

उपयुक्त प्रश्नचार्ट

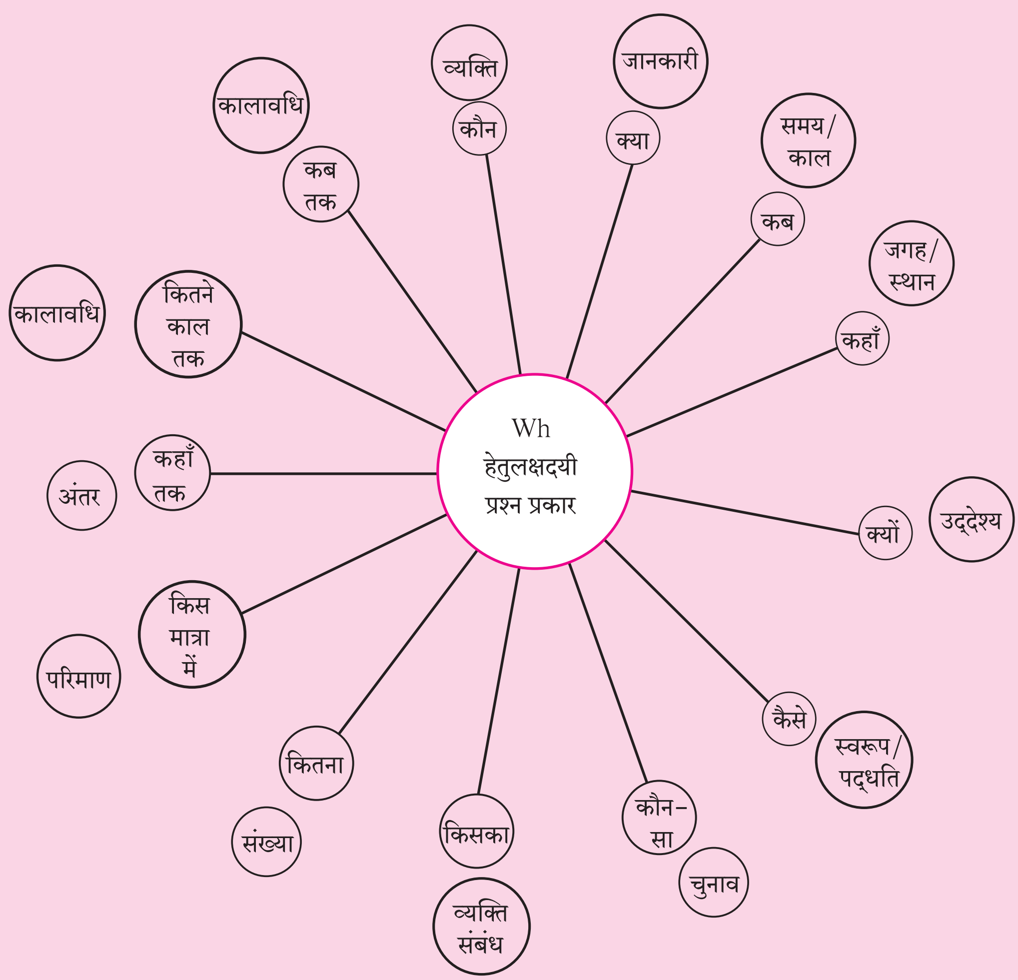

व्याकरण विभाग

(१) शब्द

- विकारी शब्द और अनेक भेद
- अविकारी (अव्यय)

(२) विकारी शब्द और अनेक भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	अनिश्चयवाचक निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

अविकारी (अव्यय)

क्रियाविशेषण,
संबंधसूचक,
समुच्चयबोधक,
विस्मयादिबोधक

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य

(७) वाक्य के प्रकार

रचना की दृष्टि से
(१) साधारण
(२) मिश्र
(३) संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से
(१) विधानार्थक
(२) निषेधार्थक
(३) प्रश्नार्थक
(४) आज्ञार्थक
(५) विस्मयाधिबोधक
(६) संदेशसूचक

(४) **शुद्धाक्षरी–** शब्दों को शुद्ध रूप में लिखना ।

(५) **मुहावरों का प्रयोग/चयन करना**

(८) संधि

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(६) **शब्द संपदा–** व्याकरण ५ वीं से ८ तक

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, विरामचिह्न, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, लय-ताल युक्त शब्द ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी लोकवाणी इयत्ता ९ वी

₹ 38.00